अब बगूंडा ने हाल चाल
करना भी सीख लिया था।
कभी-कभी वह हिन्दी भी समझी
भी करने लगी थी।
वह डाक्टर के साथ भी चिपक जाता

डॉ० एस० एस० भंडा
पुलिस वैन से
बैठे हुए

जाँच शाखा के
डी० एस० पी०
श्री नरेन्द्रनाथ दुर्ल

विद्या जैन केस
के जाँचकर्ता
इन्सपेक्टर
पंडित फकीरचंद

अभियुक्त—
कल्याण गुप्त

अभियुक्त—
भागीरथ

धन्देश शर्मा का प्र
साथी राकेश कौशिक
जिसने सर्वप्रथम धन्दे
का साथ दिया
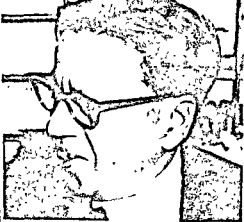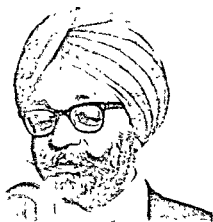
डा० एम०
के करीब
दिखती ला

डा० एम०
के करीब
लगता

करतार सिंह
के वकील
श्री एम० सी० श…

भागीरथ के
वकील
श्री मनबीर सिंह

कौशिक
वकील
स बगा
ाण गुप्ता
के वकील
ाह खान
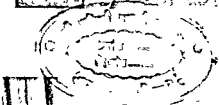
श्री सिद्धू की अदालत
का बन्द कमरा
चौकसी पर पुलिस
फैसला सुनाते
समय दरवाजा खोल दिया
गया था

हत्या की वह रात

४ दिसम्बर, १९७३ की रात थी। दिल्ली में कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। हल्का-हल्का कोहरा पड़ना शुरू हो गया था। हवा बरफीली जरूर थी, मगर ठहरी-ठहरी। आकाश में चाँद छिटक आया था। चाँद की हल्की-हल्की किरणें वातावरण में छाए कोहरे को काटने की कोशिश कर रही थीं। उजाले और धुंधलके के बीच का यह वातावरण कुछ-कुछ भयावह लग रहा था।

अभी रात के लगभग सात बजे थे। यों वक्त कुछ ज्यादा न था, मगर लोग अपने-अपने घरों में दुबके पड़े थे। पुरानी दिल्ली की बात अलग है, वहाँ सर्दियों में भी ८-९ बजे तक लोग गपशप करते-करते बतियाते रहते हैं। मगर यह किस्सा दिल्ली की अत्यन्त पोश कॉलोनी डिफेन्स कॉलोनी का था। बड़ी-बड़ी शानदार कोठियाँ, सम्पन्न लोग और अभिजात्य वातावरण—डिफेन्स कॉलोनी दिल्ली की अमीर और खूबसूरत कॉलोनियों में अग्रणी है। यहाँ लोग आपस में ज्यादा मिलते-जुलते नहीं। अपने तक ही सीमित रहते हैं। शायद आभिजातीयता की यह पहली निशानी होती है।

उस समय डिफेन्स कॉलोनी सन्नाटे में डूबी थी। सड़कें खाली-खाली, गलियाँ चुप-चुप और लोग अपने-अपने घरों में बंद।

डिफेन्स कॉलोनी के पुल से उतरते ही बाईं तरफ वाली सड़क के साथ-साथ डी-ब्लाक है। इस डी-ब्लाक में एक आलीशान कोठी है—डी-२११। इस कोठी में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त नेत्र-चिकित्सक डा०

नरेन्द्र सिंह जैन रहते हैं। साथ रहती हैं उनकी धर्मपत्नी श्री
जैन। जैन दम्पति के दो पुत्र भी हैं। चार व्यक्तियों के हिस
कोठी बहुत बड़ी है। बड़े-बड़े कमरे, दर्जनों नौकर और
अतिथियों व रोगियों की गहमा-गहमी। इस तरह यह को
गुलजार रहती है।

रात को लगभग पौने सात बजे डा० जैन अपने क्लीनिक
कोठी पर पहुँचे। उन्होंने अपनी फियेट कार अपनी पड़ोसी श्रीम
खन्ना की कोठी, डी-२९२ के सामने खड़ी की। कोठी के
एक बरसाती नाला है। कार इस तरह खड़ी की गई कि उस
तरफ नाला पड़ता था।

उस समय डी-२९२ नम्बर वाली कोठी में बिल्कुल
श्रीमती शीला खन्ना पहली मंजिल पर रहती हैं। लेकिन उस
कहीं बाहर गई हुई थीं। घर में उस समय कोई और व्यक्ति
अतः डी-२९२ कोठी की पहली मंजिल अंधेरे में डूबी हुई थी।
निचली मंजिल पर कोई रहता न था और वह बन्द पड़ी थी।

डा० जैन अपनी कार खड़ी कर अपनी कोठी की ओर लपके
कदमों में आज कुछ ज्यादा तेजी थी। आज उन्हें अपनी पत्नी
किसी के यहां जाना था। यह बात उन्होंने अपनी पत्नी को
से फोन पर कह दी थी और सात बजे तक तैयार रहने को कह

डा० जैन घर में घुसे तो देखा कि विद्या जैन बाहर जाने
तैयार उनकी प्रतीक्षा कर रही हैं। पत्नी को तैयार देख डा० जैन
में सांस आई। उन्हें डर था कि कहीं वह जाने के लिए मना न
क्योंकि फोन पर उसने शाम को बाहर जाने की अनिच्छा जाहिर

डा० जैन उस समय कुछ बेचैन लग रहे थे। कुछ थके-थके
रहे थे। पत्नी ने सोचा कि क्लीनिक में काम अधिक होगा।
घूमने से ठीक हो जायेंगे।

डा० जैन ने पत्नी से उस समय कोई बात न की। सिर्फ पानी
ठंडा गिलास लिया, टाई ठीक की और बाहर चलने को उद्यत हो

चलते-चलते विद्या जैन रुक गईं। उन्हें लगा कि उन्होंने आभूषण कम पहन रखे हैं।

"तुम तब तक चलो, मैं जरा हार पहन कर अभी आई" विद्या ने अपने पति से कहा और दूसरे कमरे में चली गईं।

डा० जैन चुपचाप नीचे चले आए और कोठी के पोर्च में खड़े अपनी पत्नी की प्रतीक्षा करने लगे।

एक मिनट बीता, दो मिनट बीते, मगर विद्या जैन नीचे न आईं। डा० जैन से रहा न गया। उन्होंने ऊँचे स्वर में पत्नी को आवाज दी और जल्दी चलने को कहा।

कुछ ही देर में विद्या जैन बाहर आ गईं। डा० जैन ने अपनी पत्नी की बगल में हाथ डाला और उसे बाहर खड़ी कार की ओर ले चले। उस समय दोनों पति-पत्नी बिल्कुल चुप थे।

अब रात के लगभग सात बज चुके थे। घड़ी की सुइयाँ चल रही थीं और चार कदम मकान के बाहर खड़ी कार तक बढ़ रहे थे। कार के पास पहुँचते ही डा० जैन ने अपनी पत्नी की बगल से हाथ निकाला और कार का दरवाजा खोलने के लिए दाईं तरफ को हो लिए। उन्होंने पत्नी को बाईं तरफ से आकर कार में आगे बैठने को कहा। श्रीमती जैन कार की बाईं तरफ को होकर कार के दरवाजे की ओर बढ़ीं।

बस, यहीं एक अकल्पित घटित हो गया।

जैसे ही श्रीमती विद्या जैन कार में घुसने वाली थीं कि उन पर दो व्यक्ति अंधेरे से निकल कर झपट पड़े। एक ने उन्हें दबोचा और दूसरे ने उनपर लगातार चाकू से वार किये।

उधर डा० जैन को लगा कि पास के नाले से एक प्रकार की घिघियाती सी आवाज उठी। वह नाले की तरफ पलटे तो उन्होंने एक व्यक्ति को नाले से बाहर निकल कर भागते देखा। दूसरा व्यक्ति पहले भाग चला था।

जैन वहीं भागते हुए आक्रमणकारियों का पीछा न करें,
उनमें से एक व्यक्ति ने डा० जैन पर पिस्तौलनुमा कोई
डा० जैन वहीं खड़े-के-खड़े रह गये। मगर सहायता के लिए
जोर से चिल्लाने लगे। दोनों आक्रमणकारी पास ही खड़ी
एक टैक्सी में सवार हुए और निकल भागे।

डा० जैन की आतंकित आवाजें सुनकर उनके कोठी के
भागे आये।

भागे में झांक कर देखा गया तो पता चला कि
जैन खून में लथपथ पड़ी थीं। नौकरों की सहायता से डा०
आहत पत्नी को भागे से बाहर निकाला और उन्हें अपनी
में ले गये।

उस समय श्रीमती विद्या जैन कराह-सी रही थीं और
के लिए छटपटा-सी रही थीं। तत्काल डा० जैन ने अपने एक
डाक्टर बुला लाने के लिए भेजा।

मगर उधर श्रीमती विद्या जैन की बिगड़ती हालत
जैन ने उन्हें अस्पताल ले जाने का निर्णय लिया। उन्होंने
की प्रतीक्षा नहीं की।

आहत श्रीमती विद्या जैन को कार में लिटाया गया और
कार को बहादुरशाह जफर मार्ग पर स्थित डा० सेन नर्सिंग
गए।

विद्या जैन मृत घोषित

सेन नर्सिंग होम' दिल्ली के प्रसिद्ध क्लीनिकों में से एक
ज्यादातर सम्पन्न लोग अपना इलाज कराते थे। काफी दिन
हो चुका है। उस समय लगभग पौने आठ का समय हो गया
होम के डाक्टर डा० एस० के० सेन रिसेप्शन डेस्क पर
दिन का काम लगभग समाप्त हो चुका था और डा० सेन घर
तैयारी कर रहे थे।

अचानक पोर्च में एक फियेट कार आ खड़ी हुई। कार में से डा०
निकले और यह चिल्लाते हुए डा० सेन की ओर लपके कि उन्होंने
पत्नी को घायल कर दिया है, कुछ करो?

डा० जैन डा० सेन के पुराने परिचित थे। अतः डा० सेन ने मामले
गम्भीरता देखते हुए तत्काल एक डाक्टर और एक नर्स को घायल
री जैन को भीतर लाने को कहा।

स्ट्रेचर पर श्रीमती विद्या जैन को लादकर रिसेप्शन तक लाया गया।
र लोग श्रीमती विद्या जैन की नब्ज व हृदयगति टटोल रहे थे।
डा० सेन ने श्रीमती विद्या जैन का चेहरा देखते ही कह दिया कि
हो मर चुकी हैं। यह सुनकर डा० जैन अत्यन्त रुआंसे-से हो गये।
सेन ने अपने मित्र को तसल्ली दी।

डा० जैन बेहद परेशान थे। पत्नी की हत्या ने उन्हें विचलित
दिया था। डा० जैन की ऐसी मनःस्थिति देखकर डा० सेन ने सोचा
मौजूदा स्थिति में डा० जैन को किसी सहारे की जरूरत है। अतः उन्होंने
जैन के बहनोई जनरल वीरेन्द्र सिंह को फोन कर दिया। तत्पश्चात
सेन ने अपनी रिसेप्शनिस्ट द्वारा डिफेन्स कालोनी पुलिस को इस
ना की सूचना दे दी।

लगभग ८-२० पर जनरल वीरेन्द्र सिंह सेन नर्सिंग होम पहुँच गये।
जैन ने अपने बहनोई को सारा मामला कह सुनाया। जनरल
न्द्र सिंह ने देरी नहीं की। उन्होंने दिल्ली की तमाम बड़ी हस्तियों
फोन खटखटा दिये, जिनमें दिल्ली के लै० गवर्नर, इंसपेक्टर-जनरल-
पुलिस, डिप्टी-कमीश्नर, रक्षा-सचिव आदि शामिल थे।

डाक्टर जैन दिल्ली की बहुत बड़ी हस्ती हैं, अतः तत्काल दिल्ली
स हरकत में आ गई। कुछ ही देर में दिल्ली पुलिस के वरिष्ठ अधि-
घटनास्थल पर पहुँच गये और मामले की तहकीकात शुरू हो

श्रीमती विद्या जैन की लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया।
पोस्टमार्टम करने वाले डाक्टर ने उस रात पोस्टमार्टम नहीं किया।

डाक्टर की राय थी कि यह मामला अत्यन्त महत्वपूर्ण है, ... ही पोस्टमार्टम करना बेहतर होगा। हो सकता है कि ... मार्टम करने में कुछ कमी रह जाये।

उधर विद्या जैन की हत्या की अफरा-तफरी में ... बीत चुकी थी। अतः पुलिस मामले की ज्यादा जांच न कर ... बस्ता डा० जैन, उनके घर पर उस दिन ठहरे हुए अतिथि ... व उनकी अमरीकन पत्नी किरनबाई आदि से पूछताछ क...

अगली सुबह अर्थात् ५ दिसम्बर, १९७३ को सारी ... तेज़ी में आ गई।

जहां-जहां श्रीमती विद्या जैन का खून गिरा था, ... मिट्टी के नमूने इकट्ठे किए गए। नाले में ही पुलिस को ... जैन के आभूषणों के कुछ मोती आदि मिले। यहीं ·०३२ ... गोली भी मिली। डा० जैन, रामसिंह, किरन बाई आदि ... खूनसने कपड़े जब्त कर लिए गए। कार में से भी रक्त के ... गए। पुलिस फोटोग्राफर ने जगह-जगह के चित्र लिए।

आवश्यक खाना-पूरी करने के बाद पुलिस ने डाक्टर ... ध्यान केन्द्रित किया, क्योंकि वारदात के समय घटनास्थल ... ही मौजूद थे।

इस पेचीदे मामले की गम्भीरता देखते हुए विद्या जैन-ह... जांच का भार अपराध शाखा को सौंप दिया गया। ... एस० पी० अशोक पटेल, डी० एस० पी० नरेन्द्रनाथ कुली ... कठोर श्रम और जी-जान से इस मामले को सुलझाने में लग ग...

पुलिस को मामला काफी पेचीदा व रहस्यपूर्ण लग रह... इतना साफ नहीं था जैसा कि डा० जैन ने बताया था। ... कई बड़ी-बड़ी असंगतियां थीं, कई संदिग्ध तत्व थे और कई ... पहले तो पुलिस को डा० जैन का आचरण ही असामान्य व ... रहा था। उन्होंने उस दिन अपनी कार अपने पड़ोसी की ... क्यों पार्क की जबकि आम तौर पर वह अपनी कार अपनी ...

मने पार्क करते थे? पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पता लगा कि श्रीमती
द्या जैन के शरीर पर छुरे के १४ घाव थे। १४ घाव करने में
यारों को कम से कम ३-४ मिनट तो लगे ही होंगे। इस बीच डा० जैन
ा करते रहे? वह उसी समय क्यों नहीं सहायता के लिए चिल्लाए
ब उनकी पत्नी की हत्या की जा रही थी? वह बाद में ही क्यों चिल्लाए,
ब हत्यारे अपना काम करके भाग रहे थे? श्रीमती विद्या जैन को
स्पताल ले जाना था तो डा० जैन को उन्हें मूलचन्द अस्पताल या आल
डिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंस या फिर सफदरजंग अस्पताल ले
जाना चाहिए था, न कि सेन नर्सिंग होम, क्योंकि पहले तीनों अस्पताल
डिफेन्स कॉलोनी के पास थे और सेन नर्सिंग होम काफी दूर था। श्रीमती
द्या जैन जिस वक्त जीवन और मृत्यु की लड़ाई लड़ रही थीं, उस वक्त
डा० जैन ने उन्हें सेन नर्सिंग होम जैसी दूर जगह ले जाकर उस कीमती
मय को क्यों बरबाद किया? दूसरी महत्वपूर्ण बात तो यह थी कि
हत्यारों ने किस प्रयोजन से श्रीमती विद्या जैन की हत्या की? यदि
हत्या धन के लिए थी तो हत्यारे श्रीमती विद्या जैन के शरीर के १५-२०
हजार के आभूषण कैसे हो न छोड़ जाते। साथ ही हत्यारों को जैन दम्पति
के कार्य-क्रम का कैसे पता चला कि अमुक समय दोनों घर से बाहर
निकलेंगे? हत्या के समय हत्यारों ने डा० जैन को छुआ तक नहीं, क्यों?
आम तौर पर यदि दो व्यक्तियों में से एक की हत्या करनी हो तो हत्यारे
दूसरे व्यक्ति को भी दबोचे रहते हैं कि कहीं वह हत्या के समय प्रतिरोध
न करे, मगर इस मामले में ऐसा कुछ नहीं हुआ, क्यों?

जब उनकी पत्नी की हत्या की जा रही थी तो डाक्टर खामोश व
तटस्थ क्यों रहे? ऐसी स्थिति में हर पति अपनी पत्नी के बचाव के लिए
आक्रमणकारियों से भिड़ जायेगा।

डा० जैन ने हत्यारों का हुलिया बयान करते हुए पुलिस को बताया
था कि वे दोनों जवान उमर के थे। मगर बाद की जाँच से पता चला
कि हत्यारे ४०-४५ वर्ष की आयु के हैं। डा० जैन ने हत्यारों का गलत
हुलिया बयान करके पुलिस को क्यों गुमराह किया?

हत्या वाले दिन शाम को डाक्टर जैन के क्लीनिक से उनके ड्राइवर ...र्मसिंह, उनकी अमरीकन पत्नी किरणबाई व उनका साला, 'अन्य महिला' डा० जैन की कार में डिफेंस कालोनी में तक आए ...लिस इस बात का पता लगाने में परेशान थी कि वह 'अन्य म... ...ौन थी ?

कुछ इसी तरह के सन्देह पुलिस के दिमाग में उमड़-घुमड़ ...लिस को लगा कि डा० जैन ही वह व्यक्ति हैं जिनके ... ...ामले की तह तक पहुंचा जा सकता है। एक तो डा० जैन ...र मौजूद थे और हत्या उनकी आंखों के सामने हुई। दूसरे डा० ...विद्या जैन के पति हैं। अतः हत्या के प्रयोजन पर डा० जैन ...काश डाल सकते हैं। इन्हीं बातों को सोचकर पुलिस ने डा० ...छताछ शुरू कर दी।

डा० जैन गिरफ्तार

डा० जैन का ख्याल था कि वह दिल्ली की इतनी बड़ी हस्ती ...पुलिस उन पर किसी तरह का सन्देह न करेगी। वह सोचते थे कि जो कुछ पुलिस को बताएंगे, पुलिस उसी लाइन पर जांच करेगी ...उन पर किसी का शक भी न जाएगा। मगर यहीं डा० जैन गलत थे। वह भूल गए कि न्यायिक जांच में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता, ...गरीब सब बराबर होते हैं।

विद्या जैन की हत्या के बाद भी डा० जैन काफी संयत रूप ... पुलिस के सामने उन्होंने अपना रोबदाब व दबदबा बनाए रखा। अधिकारी पूछ-पूछ कर हार गए, मगर डा० जैन अपने पहले के ...से जरा भी न डिगे। पुलिस काफी परेशान थी। परेशानी इसलि... भी बढ़ गई, क्योंकि डा० जैन एक प्रतिष्ठित चिकित्सक थे। पहुंच दूर-दूर तक थी। कोई साधारण अपराधी होता तो उस प... डिग्री का मार्ग अपनाया जाता। मगर डा० जैन पर इस प्रयोग ... भी सोचना खतरे से खाली न था।

ऐसी स्थिति में अपराध शाखा के युवा एस० पी०, अशोक पटेल ने [?]ी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। पहले उन्होंने हर पहलू का सूक्ष्म [?]ययन किया। जब उन्हें पक्का विश्वास हो गया कि इस मामले में [?]० जैन ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की है तो वह मामले की तह तक जाने [?]ी-जान से जुट गए।

कहते हैं कि आई० जी० पुलिस व अशोक पटेल पर काफी राज-[?]तिक दबाव डाला गया कि इस मामले में डा० जैन को न फंसाया [?]ए। मगर पुलिस के दोनों अधिकारी दृढ़प्रतिज्ञ थे कि केस की जांच [?]ष्पक्ष तथा बिना किसी दुराग्रह की जाए। यदि जांच के परिणाम [?]० जैन के विरुद्ध जाते हैं तो जाएं। *यदि डा० जैन अपराधी निकलते* तो उन्हें छोड़ा नहीं जाएगा।

बस, फिर क्या था। डा० जैन से इतनी जबरदस्त पूछताछ की गई [?]ि अन्ततः वह पिघल उठे। कहते हैं कि डा० जैन से पूछताछ भी बड़े [?]भिजातीय ढंग से की गई। निरन्तर कोई न कोई पुलिस अफसर डा० [?]न पर प्रश्नों की बौछार लगाए रहता। उन्हें एक पल भी विश्राम नहीं [?]रने दिया गया। सोने की बात तो अलग रही। खाना उन्हें खूब बढ़िया [?]लाया गया, यानी की भर के मुर्ग-मुसल्लम। मगर खाने के बाद पानी [?]हीं दिया गया। पुलिस की इतनी कड़ी पूछताछ के बाद डा० जैन हार [?]े गए और उन्होंने एक-एक करके विद्या जैन हत्याकांड के सम्पूर्ण [?]ड्यन्त्र का कच्चा चिट्ठा खोल दिया।

९ दिसम्बर, १९७३ को डा० जैन को अपनी पत्नी श्रीमती विद्या जैन की हत्या के षड़यन्त्र के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। डा० जैन की गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने एक के बाद एक कई और गिरफ्तारियां कीं। १० दिसम्बर, १९७३ को डा० जैन की भूतपूर्व सेक्रेटरी श्रीमती चन्द्रेश शर्मा को गिरफ्तार कर लिया गया। इसी दिन चन्द्रेश शर्मा के धर्म-भाई मिलिट्री के हवलदार राके[?] कौशिक को दिल्ली कैन्ट में गिरफ्तार कर लिया गया। इसके साथ ह[?] टैक्सी ड्राइवर रामजीलाल, कोटला-मुबारकपुर निवासी, करतार सिं[?]

: नीचे पुलिस को १८ कारतूस मिले। घर से एक तलवार भी मिली। :सी तरह सोते हुए करतार को भी पकड़ लिया गया। गिरफ्तारी के समय करतार सिंह के हाथ में एक पिस्तौल थी।

इस तरह दिल्ली पुलिस ने विद्या जैन के हत्यारों—करतार सिंह व उजागर सिंह—को बिना किसी खून-खराबे के गिरफ्तार कर लिया।

श्रीमती विद्या जैन की हत्या के षड्यन्त्र के आरोप में पुलिस ने आठ गिरफ्तारियाँ कीं —डा० एन० एस० जैन, राकेश कौशिक, चन्द्रेश शर्मा, भागीरथ, कल्याण गुप्ता, रामजीलाल, करतार सिंह व उजागर सिंह।

यह जिज्ञासा होती है कि एक विद्या जैन की हत्या करने के लिए आठ-आठ व्यक्ति कब, क्यों और कैसे आ जुटे? चन्द्रेश शर्मा का डा० जैन से क्या सम्बन्ध था? और वह हत्या के षड्यन्त्र में क्यों शामिल हुई। राकेश कौशिक की इस षड्यन्त्र में क्या भूमिका रही? भागीरथ, कल्याण गुप्ता, व रामजीलाल कौन हैं? करतार सिंह व उजागर सिंह जैसे कुख्यात बदमाशों को इस षड्यन्त्र में क्यों शामिल किया गया? और अन्ततः डा० जैन ने अपनी पत्नी की हत्या कराने में क्या भूमिका निभाई थी? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर हम अगले अध्यायों में अपने पाठकों को देंगे।

पति और पत्नी

५६ वर्षीय डा० नरेन्द्रसिंह जैन एक जिन्दादिल इन्सान हैं। मिलनसार, हंसमुख, रसिक और वाक-पटु—डा० जैन को इन खूबियों ने उन्हें दिल्ली में अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया था। वह अत्यन्त 'सोशल' थे। अनेक सभा-सोसायटियों के वह सदस्य हैं। दिल्ली का कोई भी प्रमुख समारोह हो, डा० जैन को उसमें देखा जा सकता था। विद्या जैन की हत्या से कुछ दिन ही पूर्व डा० एन० के० सेन के यहाँ कव्वाली का एक कार्य-क्रम था, जिसमें जैन दम्पति ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। डा० सेन के अनुसार उन कव्वालियों का डा० जैन ने बड़ा मजा लिया

रोगी अमीर हो या गरीब, मूलतः वह रोगी ही होता है। डा॰ जैन रने रोगियों का मनोविज्ञान खूब समझते थे। उनकी जिन्दादिली, लनसारी या सद्व्यवहार ने उन्हें अपने रोगियों में अत्यन्त लोकप्रिय ना दिया था। यही कारण था कि देश के कोने-कोने से रोगी उनके पास चे चले आते थे। उनके एक सहायक का कहना है कि एक रोगी डा॰ न से इलाज करवा कर इतना सन्तुष्ट हो जाता था कि वह अगली बार न्य दस रोगी और खींच लाता था। कहने वाले कहते हैं कि डा॰ न का रसिक व्यक्तित्व महिला रोगियों को विशेष रूप से आकर्षित रता था।

डा॰ जैन का क्लीनिक चांदनी चौक, कूचा महाजनी में स्थित था। वह अपना नया क्लीनिक कनॉट प्लेस में खोलने जा रहे थे कि विद्या जैन की हत्या ने उनके भविष्य के सारे कार्य-क्रम को चौपट कर दिया।

एक नेत्र-चिकित्सक के रूप में डा॰ जैन की प्रतिष्ठा को देखकर ही भारत के राष्ट्रपति महोदय ने उन्हें अपना नेत्र-चिकित्सक मनोनीत किया था। इसके अतिरिक्त अनेक मन्त्री, संसद सदस्य एवं उद्योगपति उनसे समय-समय पर इलाज करवाते ही रहते थे। डा॰ जैन की उल्लेखनीय सेवाओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रपति महोदय ने उन्हें पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत किया था। यह भी सुना जाता है कि २६ जनवरी १९७४ को राष्ट्रपति महोदय डा॰ जैन को पद्मविभूषण की उपाधि प्रदान करने वाले थे, मगर इससे पूर्व दिसम्बर १९७३ में विद्या जैन की हत्या वाली दुर्घटना हो गई, और डा॰ जैन पद्मविभूषण बनते रह गये।

कुछ ऐसी हस्ती थी डा॰ जैन की। और जब वह अपनी ही पत्नी की हत्या के षड्यन्त्र में अभियोगी बनाए गए तो सनसनी फैलना स्वाभाविक ही था। यहाँ तक भी स्वाभाविक लगता है कि पुलिस पर उस समय काफी राजनीतिक दबाव डाला गया होगा कि इस मामले में डा॰ जैन को न घसीटा जाए।

डा॰ जैन की पत्नी श्रीमती विद्या जैन (४६ वर्ष) एक सम्पन्न

खूबसूरत महिला थीं। [illegible] श्रीमती विद्या जैन हर दृष्टि से एक सुन्दर [illegible] महिला।

अपने यौवन की ही तरह श्रीमती विद्या जैन भी [illegible] थीं। [illegible] किसी न किसी [illegible] होने तो श्रीमती जैन [illegible]

लेकिन स्वभाव से श्रीमती विद्या जैन अत्यन्त [illegible] स्वभाव की महिला थीं। उनके नाज-नखरे भी बड़े थे। घर में वह हमेशा गुस्से से उबलती ही रहतीं। [illegible] घर के अन्दर वह [illegible] और [illegible] महिला के रूप में [illegible] थीं। कुछ था परस्पर विरोधी व्यक्तित्व था उनका।

जैन दम्पति के दो लड़के हैं। बड़ा लड़का प्रदत्त एम० ए० पास छोटा अभी मेडिकल पास हो है।

श्रीमती विद्या जैन एक डायमेस्टिक टेचर की महिला थीं। दोनों लड़कों पर उनका अच्छा-खासा दबदबा था। उनकी मां के रहते, मजाल कि दोनों लड़के बोल भी सकें।

श्रीमती विद्या जैन के गुस्से के सर्वाधिक शिकार होते घर के। जब तक वह घर में रहतीं, नौकरों की आफत आई रहती। घर नौकरों तो उनसे बेहद परेशान रहता था।

डा० जैन क्योंकि मूलतः सौम्य स्वभाव के थे, अतः उनकी पत्नी से पटती न थी। श्रीमती विद्या जैन के कोपों व चिड़चिड़े को देखते हुए डा० जैन अपनी पत्नी से ज्यादा बात करते हुए थे। उन्होंने उसे ढील-सी दे रखी थी। वह विद्या जैन को भाग्य समझना समझाते हुए ढोए जा रहे थे। कहने वाले तो कहते हैं कि वे अपनी पत्नी से काफी डरते थे।

श्रीमती विद्या जैन के व्यक्तित्व का एक दूसरा पहलू भी था, रोमांटिक व रोमांचक। श्रीमती विद्या जैन स्वभाव से रंगीन थीं। पैसा था, प्रतिष्ठा थी, कारें थीं, कोठी थी और था ए

रति व दो होनहार पुत्र। इस सब के बावजूद विद्या जैन अपन
व भाग्य से संतुष्ट न थीं। वह असन्तुष्ट थीं एक अतृप्त प्यास।
आदिम आग से झुलसती हुई विद्या जैन ने यौवन की वह रंगरलि
कि जिसकी परिणति अत्यन्त भयंकर, अत्यन्त भयानक हुई।
कहने वाले कहते हैं कि श्रीमती विद्या जैन हर मौसम के साथ अपना
बदल लेती थीं। लेकिन दो ऐसे नाम हैं जो हर बदलते मौसम के
द उनसे मृत्यु पर्यन्त जुड़े रहे। पहला नाम है, श्री ए० एल० नैयर
ौर दूसरा नाम है श्री प्रेम गुप्ता का। श्री नैयर विद्या जैन के पुराने
थे जबकि प्रेम गुप्ता नये। श्री गुप्ता एक प्रसिद्ध वास्तुशिल्पी
नैयर व गुप्ता दोनों विवाहित हैं।

कहते हैं कि श्रीमती विद्या जैन की रंगरलियां अपने घर में ही होती
डा० जैन अपनी व्यस्तता और कुछ पत्नी से विरक्ति के कारण
र घर से बाहर रहते थे। दोनों पुत्र भी अक्सर बाहर ही रहते
इनकी अनुपस्थिति मे इतनी बड़ी कोठी पर केवल विद्या जैन का
छत्र साम्राज्य रहता था। नौकरों को बिना अनुमति के कमरों में
श करने का अधिकार नहीं था। नैयर व गुप्ता परिवारों का जैन
ार के यहाँ काफी आना-जाना था। नैयर व गुप्ता से डा० जैन
अच्छी-खासी दोस्ती थी। अक्सर तीनों परिवार बाहर पिकनिक
दि पर भी जाया करते थे।

श्रीमती विद्या जैन व श्री ए० एल० नैयर का काफी अरसे तक घनिष्ट
बन्ध रहा। बाद में नैयर का स्थान श्री प्रेम गुप्ता ने ले लिया। नैयर
गुप्ता दोनों को एक दूसरे के भेदों का पता था। मगर दोनों ने इस
म्बन्ध में आपस में कभी चर्चा नहीं की।

एक विश्वसनीय सूत्र ने बताया कि जब घर में आमोद-प्रमोद के लिए
वसर न मिलता तो नैयर या गुप्ता श्रीमती विद्या जैन को किसी बड़े
टल में ले जाते और वहाँ अपना नाम श्री एवं श्रीमती नैयर अथवा श्री
एवं श्रीमती गुप्ता लिखवाते।

इसका भला पूछने की चीज थोड़े ही है। पहले घर के नौकरों में काना-

धूमी शुरू हुई। फिर बात दोनों लड़कों तक पहुँची। मगर वे
अपनी माँ से क्या कहते? धीरे-धीरे बात डा० जैन के कानों त
जा पहुँची। उन्होंने शुरू में एकाध बार अपनी पत्नी को सम
मगर बदले में विद्या जैन ने ऐसा नाटक किया कि डा० जैन को
जाना पड़ा।

'तुम तो अत्यन्त दकियानूसी हो। मुझपर शक करते हु
शर्म आनी चाहिए'। श्रीमती विद्या जैन का डा० जैन को अक्स
उत्तर रहता। और डा० जैन चुप हो जाते। वह यही सोचने ल
कि कहीं वह स्वयं ही तो अपनी पत्नी पर सन्देह नहीं कर रहे हैं।

लेकिन सन्देह की बेल यदि एक बार अंकुरित हो जाए तो वह
बढ़ती ही रहती है। आखिर डा० जैन इतने नादान तो थे
अपने सामने सब कुछ देखकर भी अनदेखा करते। उन्होंने
अपनी पत्नी को समझाने की कोशिश की, मगर वह अपनी
बाज नहीं आई।

और आखिर डा० जैन ने स्थिति से समझौता कर लिया
उन्होंने अपनी पत्नी से कुछ भी कहना बन्द कर दिया। उनका
मन भीतर ही भीतर घुलने लगा। इसका परिणाम यह हुआ
अपनी पत्नी से धीरे-धीरे दूर होते गये। अब उन्होंने विद्या जैन
तटस्थता का रुख अपना लिया और खुद को भाग्य के सहारे छोड़

डा० जैन की स्थिति अपने ही घर में एक अजनबी की तरह
वह खुद को बहुत अकेला महसूस करने लगे। और यह अकेला
चाकू की तरह छीलने लगा। धीरे-धीरे उन्होंने अपने को खुद तक
कर लिया।

उधर श्रीमती विद्या जैन भी अपने को खुद तक सीमित
थीं। न उन्हें पति की परवाह थी, न पुत्रों की। परवाह थी
अपनी मौज-मस्ती की।

लेकिन विद्या जैन को समाज की परवाह थी। साथ
जन भी अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रति अत्यन्त सजग थे। मग

ापत्नी के बीच एक अलिखित समझौता हो गया कि वह घर से बाहर आदर्श दम्पति का 'नाटक' करेंगे। और अन्त तक यह नाटक चलता ।

कहते हैं कि घर से बाहर जैन-दम्पति सदैव हंसते-बोलते रहते। पस में गलबहियां डाले बतियाते रहते। उन्होंने किसी तीसरे व्यक्ति को क भी न होने दिया कि वस्तुतः वह एक दूसरे से बहुत दूर हो चुके हैं।

अक्सर जैन-दम्पति दिल्ली से बाहर सैर-सपाटे के लिए भी चले ते। जून, १९७३ में दोनों पति-पत्नी विदेश यात्रा पर भी गए और जुलाई, १९७३ को दिल्ली लौटे। इसके लगभग ५ महीनों बाद पत्नी विद्या जैन की हत्या हो गई।

और एक थी प्रेमिका

बात १९६४ के आसपास की है। दोपहर हो चुकी थी। डा० चांदनी चौक स्थित अपने क्लीनिक में बैठे थे। मरीज निबट थे। थके-थके से डा० जैन काफी की चुस्कियां ले रहे थे। काफी बाद वह घर जाने की सोच रहे थे। इधर उन्होंने काफी की आखिरी की ली कि उधर से क्लीनिक में एक युवा महिला ने प्रवेश किया। के साथ एक पुरुष भी था।

डा० जैन जाते-जाते रुक गए। महिला उनकी परिचित थी। उसके ी और दादा की आंखों का इलाज भी उन्होंने ही किया था।

उस युवा महिला का नाम था चन्द्रेश शर्मा। साथ वाला पुरुष का पति था।

"हेलो! कैसे आना हुआ?" डा० जैन ने अपने सहज स्वर में पूछा।

"डाक्टर साहिब! इनकी आंखों में काफी दिनों से तकलीफ चल रही लगातार पानी आता रहता है। जरा देख लीजिए न?" चन्द्रेश ने अपने पति का परिचय डा० जैन से कराते हुए कहा।

और डा० जैन चन्द्रेश शर्मा के पति की आंखों का निरीक्षण करने । निरीक्षण खत्म हुआ तो डा० जैन एकाएक गम्भीर से हो गए।

एकाध मिनट बाद डाक्टर ने दवा की ट्यूब उठायी और उन कज-
ी आँखों मे दवा डाल दी।

चन्द्रेश दवा की तेजी से सी-सी कर उठी।

उधर डाक्टर के होंठों से भी एक लम्बी आह-सी निकल गई।

चन्द्रेश बिना कुछ बोले चुपचाप क्लीनिक से चली गई।

डाक्टर उसे रोक न सका, चाहते हुए भी।

चन्द्रेश चली तो गई, मगर डाक्टर जैन पर जादू-सा कर गई। उसके
ितिम सौन्दर्य ने डाक्टर को विचलित कर दिया था।

चन्द्रेश थी भी बला की खूबसूरत। खिलता हुआ गोरा रंग, पंने
ा-नक्श, कन्धों तक झूलते 'बॉब हेयर', नशीली चमकदार आँखें, और
र पर मांसल देहयष्टि। उमर थी लगभग २५-२६ साल। उसकी
नोदार आँखों में गजब की कशिश थी। उसके पतले-पतले, फड़कते
ठों पर आदिम आग की परछाइयाँ तैरती थीं। यौवन के भार
गहराई उसकी 'फिगर' वीनस की संगमरमरी मूर्ति की याद दिला
ी थी। उसके चेहरे पर गजब की 'सेक्स अपील' थी। जब वह बात
रते-करते अपने लहरदार बालों को एक झटका देती थी तो ऐसा
गता था कि मानो कोई तूफान आ गया हो। चन्द्रेश ····मांसलता
ौर यौवन का ऐसा दहकता हुआ दरिया थी जिसमे डा० जैन आकंठ
ब गए।

उधर चन्द्रेश भी डाक्टर जैन की सौम्यता, सौजन्यता और ज़िन्दा-
ली से प्रभावित हुए बिना न रही। कितने बड़े आदमी हैं वह, मगर
से कितने हैं? चन्द्रेश का सारा मन इस बात से तरंगित था कि इतना
ड़ा डाक्टर उससे प्रभावित हुआ है।

वह सारी रात डाक्टर जैन की तुलना अपने पति यज्ञदेव शर्मा से
रती रही। उसे बार-बार यही लगा कि डाक्टर एक श्रेष्ठ और सम्पूर्ण
ादमी है। कैप्टन शर्मा तो उनके सामने कुछ भी नहीं।

चन्द्रेश शर्मा डाक्टर जैन की विनम्रता से बड़ी प्रभावित हुई।

"खैर। और सुनाओ, जिन्दगी कैसे कट रही है?" डाक्टर ने सहज जिज्ञासा प्रकट की।

"डाक्टर, मैंने इधर अपने देवर से शादी कर ली है। वह मिलि में कैप्टन हैं।" चन्द्रेश ने जरा मुस्कराते हुए कहा।

"बहुत खूब। बधाई। फिर तो जिन्दगी बड़ी रंगीन गुजर होगी?" डाक्टर जैन ने जरा छेड़ते हुए पूछा।

चन्द्रेश कुछ बोली नहीं। उसके गालों पर गुलाब के सुर्ख फूल खि आये।

चन्द्रेश का शर्मसार चेहरा देखकर डा० जैन का रसिया मन उठा। वह कुछ बोले नहीं, सिर्फ उसे एकटक देखते रहे।

चन्द्रेश ने अपनी आँखें ऊपर उठाई। चार आँखें मिलीं। और आँखें फिर झुक गई।

कुछ देर बाद चन्द्रेश चली गई। मगर अपने पीछे छोड़ यौवन की एक ऐसी गन्ध जो काफी देर तक डाक्टर जैन को मद रही।

अगले दिन लगभग १२ बजे के करीब फिर चन्द्रेश डा० जैन क्लीनिक में पहुँची।

कमरे में घुसते ही उसे लगा कि डाक्टर जैन पहले से ही उस प्रतीक्षा कर रहे हैं।

चन्द्रेश डाक्टर के पास वाले स्टूल पर बैठ गई।

"कहो, आँखों का क्या हाल है?"

चन्द्रेश चुप रही। सिर्फ उसने अपनी नशीली आँखें पल भर लिए ऊपर उठाईं, फिर नीची कर लीं।

डाक्टर के हाथ उठे और चन्द्रेश के चेहरे पर टिक गए। उनकी उँगलियाँ चन्द्रेश की पुतलियों को ऊपर-नीचे करने लगीं।

चन्द्रेश को एक अजीब-सी सनसनी हो रही थी।

डाक्टर की उँगलियाँ भी काँप रही थीं।

एकाध मिनट बाद डाक्टर ने दवा की टयूब उठायी और उन कजरारी आँखों में दवा डाल दी।

चन्द्रेश दवा की तेजी से सी-सी कर उठी।

उधर डाक्टर के होंठों से भी एक लम्बी आह-सी निकल गई।

चन्द्रेश बिना कुछ बोले चुपचाप क्लीनिक से चली गई।

डाक्टर उसे रोक न सका, चाहते हुए भी।

चन्द्रेश चली तो गई, मगर डाक्टर जैन पर जादू-सा कर गई। उसके अप्रतिम सौन्दर्य ने डाक्टर को विचलित कर दिया था।

चन्द्रेश थी भी बला की खूबसूरत। खिलता हुआ गोरा रंग, पैने नैन-नक्श, कन्धों तक झूलते 'बॉब हेयर', नशीली चमकदार आँखें, और उस पर मांसल देहयष्टि। उमर थी लगभग २५-२६ साल। उसकी पानीदार आँखों में गजब की कशिश थी। उसके पतले-पतले, फड़कते होंठों पर आदिम आग की परछाइयाँ तैरती थीं। यौवन के भार से गदराई उसकी 'फिगर' वीनस की संगमरमरी मूर्ति की याद दिला देती थी। उसके चेहरे पर गजब की 'सेक्स अपील' थी। जब वह बात करते-करते अपने लहरदार बालों को एक झटका देती थी तो ऐसा लगता था कि मानो कोई तूफान आ गया हो। चन्द्रेश ···मांसलता और यौवन का ऐसा दहकता हुआ दरिया थी जिसमें डा० जैन आकंठ डूब गए।

उधर चन्द्रेश भी डाक्टर जैन की सौम्यता, सौजन्यता और जिन्दादिली से प्रभावित हुए बिना न रही। कितने बड़े आदमी हैं वह, मगर भले कितने हैं? चन्द्रेश का सारा मन इस बात से तरंगित था कि इतना बड़ा डाक्टर उससे प्रभावित हुआ है।

वह सारी रात डाक्टर जैन की तुलना अपने पति महादेव शर्मा से करती रही। उसे बार-बार यही लगा कि डाक्टर एक श्रेष्ठ और सम्पूर्ण आदमी हैं। कैप्टन शर्मा तो उनके सामने कुछ भी नहीं।

। महसूस होता था कि चन्द्रेश उनके जीवन की नौका बन चुकी है।
नों एक दूसरे के पूरक बन चुके थे।

क्लीनिक मे डा० जैन व चन्द्रेश के सम्बन्धो को लेकर कुछ-कुछ
नाफूसी शुरू हो गई थी। क्लीनिक से बात उड़ी तो रोमांस की गन्ध
० जैन के घर तक आ पहुँची।

श्रीमती विद्या जैन बहुत ही तेज और समझदार स्त्री थीं। जब
न्होंने अपने पति व चन्द्रेश के सम्बन्धों के बारे में सुना तो एकाएक उन्हें
श्वास ही न आया। मगर जब प्रमाण मिलने शुरू हुए तो वह बौखला
ठीं। वह सहन न कर पायी कि उनका पति एक विधवा से इश्क लड़ाये।
ह अपनी कारगुजारियों को भूल चुकी थीं। उनकी नजर में डा० जैन
दोषी थे।

एक रात सोते समय पति-पत्नी के बीच चन्द्रेश शर्मा को लेकर अच्छी-
ासी तकरार हो गई। डा० जैन पहले तो अपनी पत्नी के वाकबाण
चुपचाप सुनते रहे। अन्ततः उनसे रहा न गया और उन्होंने विद्या
जैन पर उसके सम्बन्धों को लेकर छींटा-कशी कर दी। बस, फिर क्या
था ? विद्या जैन का गुस्सा कहर ढाने लगा। परेशान से डा० जैन दूसरे
कमरे में सोने चले गये।

अगली सुबह उन्होंने अपनी पत्नी को समझाने का प्रयत्न किया कि
उसके सारे सन्देह निर्मूल हैं। गुबार निकलने के बाद श्रीमती विद्या जैन
कुछ संयत हो चुकी थीं। वह चुप रहीं। कुछ देर बाद डा० जैन
अपने क्लीनिक चले गए और विद्या जैन प्रेम गुप्ता का नम्बर मिलाने
लगीं।

डा० जैन ने सोचा कि उनके और चन्द्रेश शर्मा के सम्बन्धों को लेकर
कोई और बवंडर खड़ा न हो, अतः कोई ऐसा रास्ता निकालना चाहिए
जिससे लोगों को शक भी न हो, और दूसरी तरफ उन्हें चन्द्रेश शर्मा का
सान्निध्य भी मिलता रहे।

क्लीनिक में आकर उन्होंने सारे मामले पर चन्द्रेश शर्मा से विचार-
विनिमय किया। चन्द्रेश भी सोच मे पड़ गई। लेकिन वह काफी तेज

लगा। अपनी सहेलियों के व्यंग्यबाण वह सह न सकी। वह अस्वस्थ हो गई। चन्द्रेश को लगा कि यह सब विधा जैन के कारण हुआ है। यह हमारे बीच न होती तो डा० जैन उसे जरूर अपने साथ विदेश ले यदि यह डा० जैन की पत्नी होती तो क्या डा० जैन उसे छोड़कर सकते थे ?

बस, आहत चन्द्रेश शर्मा फुफकार उठी। उसने निश्चय कि हर हालत में, किसी भी तरीके से विधा जैन को बीच से होगा। उसे हर कीमत पर डा० जैन की पत्नी बनना है।

तुम पियो रस मेघ का

उस दिन चन्द्रेश शर्मा शीशे के सामने खड़ी बाल संवार रही थी और अपने ही सौन्दर्य पर मुग्ध हुए जा रही थी।

जैसे ही शीशे के और करीब आकर उसने होंठों पर लगाई कि वह चौंक गई। अरे! यह क्या?

उसने छोटा शीशा पकड़ा और बहुत करीब से अपने गालों को लगी। हाय राम। यह कैसे हुआ?

चन्द्रेश के गालों पर हल्की-हल्की झाइयाँ उतर आई थीं। देखकर वह घबरा-सी गई। कहीं यह और न बढ़ जाएँ। वह सारा चेहरा खराब हो जाएगा। फिर डाक्टर क्या कहेगा?

चन्द्रेश अपने सौन्दर्य के प्रति बहुत सचेत रहने वाली महिला वह अपने चेहरे पर हल्का-सा दाग भी सहन न कर सकती थी। और तो झाइयाँ हैं। एक बार हो जाएँ तो बढ़ती ही जाती हैं।

चन्द्रेश ने देर नहीं की। उसी समय डाक्टर को फोन किया किसी 'चर्म रोग विशेषज्ञ' का नाम व पता पूछ लिया। डाक्टर ने प्लेस के एक सुप्रसिद्ध चिकित्सक का नाम बता दिया। चन्द्रेश ने वक्त फोन करके उस चिकित्सक से भेंट का समय ले लिया। जैन भी उस चिकित्सक को फोन कर चुके थे।

नियत समय पर चन्द्रेश शर्मा उस चिकित्सक से मिलने चली

चिकित्सक ने निरीक्षण करने के बाद चन्द्रेश से कहा, "आप में 'आयरन' की कमी है। यह दवाइयाँ कुछ दिन खाइए। अच्छा हो, यदि आप दिन में एक बार सेब के रस का सेवन किया करें। निश्चिन्त रहें, आप बिल्कुल ठीक हो जायेंगी।"

चन्द्रेश क्लीनिक से बाहर निकली तो उसने पास ही केमिस्ट से दवाइयाँ खरीद लीं। अब वह फलों के रस की किसी दुकान की तलाश में रीगल तक चली आई। वहाँ से उसने किसी से पूछा तो उसे बताया गया कि मोहनसिंह प्लेस में ऐसी कई दुकानें हैं। चन्द्रेश के कदम मोहनसिंह-प्लेस की ओर बढ़ गए।

पहली मंजिल पर ही उसे फलों के रसों की कई दुकानें नजर आईं। एक अच्छी-सी दुकान के सामने रुककर उसने सेब के रस के एक गिलास का आर्डर दे दिया।

रस पीकर, सन्तुष्ट-सी चन्द्रेश चली गई।

अगले दिन वह फिर उसी दुकान पर रस पीने चली आई। आज वहाँ पहले से ही एक युवक खड़ा सेब का रस पी रहा था। चन्द्रेश ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। वह चुपचाप रस पीती रही। मगर वह युवक चन्द्रेश के दहकते सौन्दर्य को देखकर रोमांचित हो उठा। चन्द्रेश ने पैसे चुकाए और चलती बनी। मगर वह युवक वहीं खड़ा उसे देखता ही रहा।

अगले दिन जब चन्द्रेश फिर उसी दुकान पर रस पीने गई तो वही रस वाला युवक वहाँ पहले से ही खड़ा था। आज चन्द्रेश ने उसे नजर भर के देखा।

उसकी उमर रही होगी लगभग २५-२६ साल, यानि चन्द्रेश का हम उम्र। ६ फुट को छूता लम्बा कद। हल्का साँवला रंग। मुंह पर चेचक के दाग। भरा-भरा, बलिष्ठ बदन। चेहरे पर एक अजीब सी कशिश। होंठों पर एक मासूम मुस्कराहट।

चन्द्रेश ने उसकी तरफ देखा तो वह पहले से ही उसकी तरफ देख रहा था। चन्द्रेश ने नजरें घुमा लीं। रस पिया, पैसे चुकाए और चली गई।

क निडर और बलिष्ठ युवक है। वह उसके लिए खतरों से भी भिड़ सकता है।

ऐसी ही एक मीटिंग के दौरान राकेश ने डींग हांकी कि उसकी हरि-याणा के कई मंत्रियों से जान-पहचान है। वह कई संसद-सदस्यों को भी जानता है। उसकी पहुंच दूर-दूर तक है।

अब चन्द्रेश ने राकेश के बारे में गम्भीरता से सोचना शुरू कर दिया। से लगा कि यह तो बड़े काम का आदमी है। इसका सही उपयोग किया जाना चाहिए।

उधर उसने पक्का निश्चय कर ही लिया था हर कीमत पर उसे विद्या न को अपने रास्ते से हटाना है। चन्द्रेश को यह काम बड़े जोखिम का ग रहा था। इतनी बड़ी मुहिम में उसे किसी विश्वासपात्र साथी की आवश्यकता थी। उसे लगा कि राकेश कौशिक उसकी सहायता कर सकता है।

और एक दिन उसने राकेश कौशिक के आगे अपना दिल खोल ही दया। उसने राकेश को साफ बता दिया कि वह डा० जैन से विवाह रना चाहती है। इसमें रुकावट है विद्या जैन। बिना विद्या जैन को टाए वह डा० जैन की पत्नी कभी नहीं बन सकती।

राकेश कौशिक चन्द्रेश से अत्यन्त प्रभावित था। जाने किस बात से रित होकर उसने चन्द्रेश से कह दिया कि वह इस 'मिशन' में उसके साथ हेगा। "जहां तक विद्या जैन को हटाने का सवाल है, यह काम तो टकियां बजाते ही कर दूंगा।" राकेश ने चन्द्रेश को आश्वासन देते ए कहा।

चन्द्रेश राकेश का सहारा पाकर आश्वस्त हुई। उसे लगा कि शायद ह अब अपने उद्देश्य में सफल हो जाएगी।

मिशन की सफलता के लिए यह आवश्यक था कि राकेश कौशिक । डा० जैन से मिलवाया जाय। लेकिन उसका क्या कहकर परिचय दिया ाय। डा० जैन उसके प्रेमी थे, अतः वह चन्द्रेश के किसी अन्य मित्र को पर सहन न कर पायें। कुछ ऐसा ही सोचकर चन्द्रेश ने राकेश को

सकी। चन्द्रेश को जल्दी थी। वह चली गई।

इसके बाद चन्द्रेश पीर सैयद से नहीं मिली। जाने क्यों?

कहते हैं कि उपर्युक्त भेंट के बाद चन्द्रेश ने राकेश कौशिक से जब अपनी समस्या पर विचार-विनिमय किया तो उसने कहा कि मैं मुज-फ्फरनगर के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी को जानता हूं। हमें पहले तुम दोनों की जन्म-कुंडलियां बनवानी चाहिये। फिर किसी जाने-माने ज्योतिषी सलाह लेंगे।

इसके कुछ ही दिनों बाद चन्द्रेश व राकेश कौशिक का हरिद्वार जाने कार्यक्रम बन गया। राकेश ने मुजफ्फरनगर से होकर हरिद्वार जाने निश्चय किया। चन्द्रेश ने भी हां कर दी।

यह बात १९७०-७१ के आसपास की है।

नियत दिन वे दोनों मुजफ्फरनगर पहुंचे और वहां के सुप्रसिद्ध योतिषी श्री आनन्दमणि से मिले। श्री आनन्दमणि ३३ वर्ष के तरुण ।

चन्द्रेश ने आनन्दमणि से राकेश कौशिक का परिचय अपना भाई हकर कराया।

"मैं आपके पास बहुत दूर से आई हूं" चन्द्रेश बोली—"आप एक रुष व एक स्त्री की जन्मकुंडली बना दें।

आनन्दमणि तैयार हो गए। उन्होंने दोनों व्यक्तियों की जन्म तिथियों के बारे में पूछा।

चन्द्रेश ने पुरुष की जन्म तिथि बताई—सम्वत् १९७७ (शक १८४२) वैशाख शुक्ला पक्ष, तिथि एक। और वंश 'जैन वंश'। महिला की जन्म तिथि थी—विक्रमी सम्वत् १९९६, भादों, शुक्ला पक्ष, अष्टमी। महिला के पिता का नाम लिखाया गया—श्री दीपचन्द शर्मा। (चन्द्रेश शर्मा के पिता का नाम श्री दीपचन्द शर्मा था।)

चन्द्रेश ने जानबूझ कर अपना व डा० जैन का नाम नहीं बताया। ज्योतिषी आनन्दमणि ने भी नाम जानने पर जोर नहीं दिया, क्योंकि जन्म कुंडलियां बनाने में केवल जन्म तिथियों की ही जरूरत होती है।

पत्नी बनना है और उसके लिए विद्या जैन को मार्ग से दूर करना है।
डा० जैन विद्या जैन को तलाक देने को तैयार नहीं थे। विद्या जैन
घ मरने वाली नहीं है। जादू-टोने से चन्द्रेश विद्या जैन का कुछ
गाड़ नहीं सकी। तो फिर क्या किया जाए?

अब सिर्फ एक ही रास्ता बच जाता है—और वह है विद्या जैन का
स्तित्व मिटा देना!

हत्या का ख्याल आते ही एक बार तो चन्द्रेश कांप-सी गई। ओफ!
गर दूसरे ही क्षण उसे लगा कि इसके सिवा चारा ही क्या है?

उसने कौशिक से जब अपना मन्तव्य प्रकट किया तो पहले वह भी
कि पड़ा। मगर बाद में वह भी इस निर्णय पर पहुंचा कि बिना विद्या-
न की हत्या के चन्द्रेश डा० जैन की पत्नी नहीं बन सकती। और उसने
न्द्रेश की ओर सहयोग का हाथ बढ़ा दिया।

चन्द्रेश और कौशिक रात दिन योजना बनाते कि किस ढंग से विद्या
न की हत्या की जाय? चन्द्रेश का दिमाग इस दिशा में ज्यादा आगे
न चल सका मगर कौशिक का दिमाग बहुत तेजी से दौड़ने लगा।
सने चन्द्रेश को आश्वस्त कर दिया कि विद्या जैन की हत्या की योजना
ाने व उसे कार्यान्वित करने का काम वह बखूबी कर लेगा।

इस तरह विद्या जैन हत्याकांड का 'डायरेक्टर आफ आपरेशन'
न गया राकेश कौशिक। उसकी प्रेरक बनी—चन्द्रेश शर्मा।

विद्या जैन की हत्या से कुछ दिन पहले चन्द्रेश ने सोचा कि क्यों न किसी
योतिषी से सलाह-मशविरा कर लिया जाए। क्या पता विद्या जैन की
त्या के बाद डा० जैन उससे शादी करने से इन्कार कर दें। इसलिए
ह आश्वस्त होना चाहती थी कि क्या विद्या जैन के बाद वह डा० जैन की
त्नी बन सकेगी?

चन्द्रेश ने किसी अच्छे ज्योतिषी की तलाश शुरू कर दी। हौज काजी
फलों के रस के एक विक्रेता मोहन ने चन्द्रेश को बताया कि रामा-कृष्णा
रम् में भगवानदास नामक एक प्रसिद्ध ज्योतिषी रहता है। वह भूत-
विष्य की सब बातें बता देता है।

२८ नवम्बर १९७३ को चन्द्रेश राकेश कौशिक को ज्योतिषी भगवानदास के पास पहुंची। भगवानदास १२ -- और सी० बी० आई० में काम करता था। मगर ज्योतिष थी। उसकी ख्याति दूर-दूर तक थी।

चन्द्रेश ने एकान्त में भगवानदास से बातचीत की। उसने उन्हें कि पति की मृत्यु के बाद उसके सम्बन्ध किसी अन्य व्यक्ति से बने। कुछ दिनों बाद ये सम्बन्ध खत्म हो गये। आजकल उसके सम्बन्ध अन्य व्यक्ति से चल रहे हैं। आप कृपया यह बताएं कि क्या मेरा उस व्यक्ति से हो सकेगा? चन्द्रेश ने अत्यन्त कातर स्वर में दास ने पूछा।

"उस व्यक्ति का नाम क्या है, जिससे तुम विवाह करना हो?" ज्योतिषी भगवानदास का प्रश्न था।

"उस व्यक्ति का नाम 'एन' से शुरू होता है।" चन्द्रेश नरेन्द्र सिंह जैन का नाम छुपाने के उद्देश्य से कहा।

"मगर यह बताओ कि 'एन' किस नाम के लिए है?"

"किसी नाम के लिए भी हो सकता है। यथा, नारायण, नरे आदि या फिर कोई भी नाम जिसकी राशि वृश्चिक होती है।" च उत्तर था।

"ऐसे काम नहीं चलेगा। बिना जन्मकुंडली देखे मैं कुछ न सकता। अच्छा, उस व्यक्ति की आयु क्या है?"

"यही ५० और ५२ के बीच।"

"क्या वह अविवाहित है? ज्योतिषी भगवानदास की थी।

"नहीं, वह विवाहित है।" चन्द्रेश ने नजरें चुराते हुए कह

यह सुनते ही भगवानदास जरा चौंक से गये। ज्योतिष शौकिया थी, व्यवसाय नहीं। अतः उन्होंने चन्द्रेश से स्पष्ट शब्दों में "तुम किसी का दाम्पत्य जीवन बरबाद करने पर तुली हो। अतः मैं मामले में कोई भी भविष्यवाणी नहीं कर सकता।"

चन्द्रेश यह उत्तर सुनकर हताश नहीं हुई। वह बड़े आत्मविश्वास से बोली, "आप जन्मकुंडली खुद देख लीजिए। आपको स्वयं विश्वास हो जाएगा कि उस व्यक्ति की पत्नी इसी योग्य है कि उसे त्याग देना चाहिए।"

इस पर ज्योतिषी भगवानदास चुप रहे।

और चन्द्रेश यह कहकर चली आई कि रविवार को वह जन्मकुंडली लेकर आएगी।

नियत दिन चन्द्रेश जन्म कुंडलियां लेकर ज्योतिषी भगवानदास के घर पहुंची। उस दिन उसके साथ राकेश कौशिक नहीं था। भगवानदास ने उसके बारे में पूछा तो चन्द्रेश ने उत्तर दिया—"भाई साहब मुझे यहां तक छोड़ गये हैं। उन्हें कहीं काम था। अतः वह चले गये हैं।"

ज्योतिषी भगवानदास ने जन्मकुंडलियां चन्द्रेश से ले लीं। एक सरसरी नजर से उन्हें देखा और चन्द्रेश से बोले, "आप इन्हें यहीं छोड़ जाइए। मैं इनका अध्ययन कर लूंगा। १५-२० दिनों के बाद मुझसे मिलना। फिर जो चाहे प्रश्न पूछना।"

इस बीच कुछ अन्य लोग वहां आ गए थे। अतः चन्द्रेश उठी और चली गई।

उसे १५-२० दिनों बाद ज्योतिषी भगवानदास से कुछ पूछने का अवसर ही नहीं मिला।

हत्या के चक्कर में १० हजार फूंके

राकेश कौशिक ने विद्या जैन की हत्या करवाने की जिम्मेदारी तो अपने सिर ले ली, मगर हत्या की बात करना और, उसे कार्यान्वित करना और बात है। उसे महसूस होने लगा कि यह काम इतना आसान नहीं है जितना उसने समझ रखा था। उसको डींग मारने की आदत ने ही उसे फंसा दिया था। चन्द्रेश के वह इतना प्रभावित था कि एक बार 'हां' कहकर पीछे नहीं हट सकता था। अपने वायदे से मुकर के वह एक और के आगे अपनी कायरता नहीं दिखाना चाहता था।

विद्या जैन की हत्या के ... कौशिक

"तो फिर उससे क्यों मिलना चाहते हो?" रामफल ने पूछा।

"मुझे एक पारिवारिक समस्या परेशान किए हुए है।"

"बेहतर हो तुम कमांडर से मिलो जो तुम्हें पुलिस की सहायता देंगे।" रामफल ने सुझाव दिया।

कौशिक पहले तो चुप रहा। फिर उसने दूसरा ही सवाल रामफल छा, "मगर तुम जग्गी को कैसे जानते हो?"

'मेरे गांव का ही एक बदमाश है—करनसिंह। उसी के माध्यम से जग्गी के बारे में जानता हूं।" रामफल ने उत्तर दिया।

अब कौशिक की रुचि करनसिंह में हो गई। उसने करनसिंह का पूछा तो रामफल ने बता दिया कि वह सिविल लाइन्स के क्वार्टरों फूलदास के साथ रहता है।

उस वक्त बात यहीं खत्म हो गई। मगर कौशिक ने निश्चय कर लिया वह शीघ्र ही करनसिंह से मिलेगा। शायद काम बन जाय।

कुछ ही दिनों बाद राकेश कौशिक सिविल लाइन्स में फूलदास के र्टर पर करनसिंह से मिला। राकेश कौशिक ने उसे बताया कि उसे मफल ने भेजा है।

"किसलिए——?" करनसिंह अपने अक्खड़पन में बोला।

कौशिक करनसिंह के करीब खिसक आया और आहिस्ते से बोला, मुझे एक ऐसे आदमी की जरूरत है जो एक डाक्टर की पत्नी का कत्ल र सके।"

करनसिंह की आंखें बस एक पल के लिए चमकीं।

"मैं इस पर सोचूंगा।" उसने कुछ देर बाद कहा।

फिर आने का वायदा करके राकेश कौशिक वहां से चला आया।

उपर्युक्त घटना के १०–१२ दिनों बाद राकेश फिर करनसिंह से मिलने या। इस समय उसके साथ चन्द्रेश शर्मा भी थी।

"पहले यह बताओ कि कत्ल किसका करना है?" करनसिंह का हला प्रश्न था।

राकेश कुछ बोलता, कि इससे पहले चन्द्रेश बोल पड़ी, "तुम्हें

फूलदास के यह पूछने पर कि कौशिक उससे कौन सा काम करवाना चाहता है करनैलसिंह ने उसे बताया, "वह मुझसे एक स्त्री की हत्या करवाना चाहता है जो कि मैं करना नहीं चाहता।"

आखिर करनैलसिंह कौशिक से कब तक बचता? कुछ दिनों बाद कौशिक ने उसे फूलदास के क्वार्टर पर पकड़ ही लिया।

"तुमने काम नहीं किया। अतः पैसा वापिस करो।" कौशिक गुस्से से चीखा।

मगर करनैलसिंह बोला नहीं, बस हंसता रहा।

उसे हंसता देखकर कौशिक गुस्से में पागल हो गया। दिल तो उसका कर रहा था कि इस बदमाश की गर्दन दबोच ले। मगर करनैलसिंह से उलझना उसने ठीक न समझा। अलबत्ता उसने करनैलसिंह को खूब खरी-खोटी सुनाई।

उधर करनैलसिंह भी कम थोड़े ही था। उसने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

"मैं पंचायत बुलाऊंगा, और तुम्हें देख लूंगा।" कौशिक ने धमकी दी और वहां से चला गया।

कहते हैं कि करनैलसिंह ने वह दस हजार रुपए एक ट्रक खरीदने में लगा दिए।

इस तरह विद्या जैन की हत्या कराने का पहला षड्यन्त्र विफल रहा।

मगर चन्द्रेश व कौशिक चुप होकर बैठने वाले नहीं थे।

एक और विफल प्रयास

करनैलसिंह के दगा देने पर कौशिक दुःखी तो बहुत हुआ, पर हताश नहीं। उसने सोचा, चूंकि उसने एक अपरिचित और 'व्यावसायिक' व्यक्ति को चुना इसलिए रुपये भी गए और योजना भी गुड़-गोबर हो गई। व्यावसायिक आदमी का क्या भरोसा कि कब दगा दे दे?

: हौज काजी पहुंच गया। यहीं चन्द्रेश शर्मा रहती थी।

"यह लो ५ रुपए। चाय पानी पी लो। मैं अभी आता हूं। मेरा इन्त-
ार करना।" कहकर कौशिक एक गली में चला गया चन्द्रेश से मिलने।

कुछ ही देर बाद कौशिक लौट आया। वे दोनों वहां से कमला
कॉट गए और एक पेट्रोल पम्प पर खड़े-खड़े रात आठ बजे तक किसी
। इन्तजार करते रहे। शायद चन्द्रेश का। कौशिक को पता था कि
१० जैन चन्द्रेश को इसी जगह पर उतारा करते थे।

काफी देर तक जब वहां कोई न आया तो निराश हो कौशिक ने टैक्सी
ड़ी और दिल्ली कैंट चला गया। रामकिशन साथ ही था और उस
ात रामकिशन कौशिक के साथ उसी के कमरे में सोया।

अगली सुबह वे दोनों फिर हौज काजी पहुंचे। राकेश ने उसे मोड़
र इन्तजार करने के लिए कहा और खुद एक गली में चला गया। कुछ
र बाद वह लौटा और उसने रामकिशन को चालीस रुपए थमा दिये।

"मेरे पास अभी ट्रक के पार्ट्स खरीदने का पैसा नहीं है। मुझे घर
ाकर पैसों का इन्तजाम करना पड़ेगा।" कौशिक ने रामकिशन से कहा।
"तुम कैन्ट जाकर मेरे कमरे में आराम करो। कल मुझे फिर यहीं
मिलना।" इतना कहकर कौशिक चला गया। और रामकिशन दिल्ली
कैन्ट रवाना हुआ।

अगले दिन लगभग २ बजे दोपहर रामकिशन को कौशिक उसी
जगह मिला। दोनों वहीं खड़े कुछ देर तक बातें करते रहे।

कुछ समय बाद वहां एक युवा एवं आकर्षक महिला आ पहुंची।
कौशिक उसे जरा परे ले गया और उसके कान में कुछ फुसफुसाने लगा।

रामकिशन को जिज्ञासा हुई कि यह महिला कौन है। उसने कौशिक
से पूछा "यह कौन है?"

"यह मेरी दफ्तरी है। इसका नाम चन्द्रेश शर्मा है।" कौशिक
ने उस महिला से रामकिशन का परिचय कराया।

फिर वह तीनों चावड़ी बाज़ार के म्युनिस रेस्तरां में चले गए। कौशिक
और चन्द्रेश शर्मा तो ऊपर बालकनी में जा बैठे, जबकि रामकिशन यहीं

हत्या का शब्द सुनते ही रामकिशन कांप-सा गया। वह डरी-डरी
...से कौशिक की ओर देखने लगा।

कौशिक ने उसे और डराते हुए धमकी दी, "यदि तुमने यह काम
किया तो तुम दिल्ली से वापिस जिन्दा नहीं जा सकोगे। तुम मुझे
जानते। तुम असफल रहे तो तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।"

कौशिक की ये धमकियां सुनकर रामकिशन और भी डर गया।
कुछ बोला ही न गया।

अब कौशिक ने रामकिशन को धन का लालच देते हुए फुसलाने
कोशिश की, "यदि तुमने यह काम कर दिया तो तुम्हें मैं ढेरों रुपया
।"

"देखो, मैं बहुत ही गरीब आदमी हूं। मैं यह काम नहीं कर सकता।"
किशन ने दबासे स्वर में कौशिक से कहा।

इस पर कौशिक ने फिर अपनी धमकी दुहरा दी, "अगर तुमने
नहीं किया तो तुम जिन्दा न रह सकोगे।"

रामकिशन चुप रहा और कुछ सोचने लगा। वह डर गया था।
कौशिक ने समझा कि उसकी धमकी काम कर गई है। अतः वह उसे
स्टैंड पर ले गया और चालीस रुपए थमाते हुए बोला, "यहां से तुम
गाजियाबाद जाओ और वहां घंटाघर के निकट रावत की दुकान
उससे एक चाकू खरीद लाओ। देखो, भागने की कोशिश मत करना।"

रामकिशन गाजियाबाद गया और निश्चित दुकान से आठ रुपए में
चाकू खरीद कर वापिस दिल्ली बस स्टैंड पहुंच गया। वह रात उसने
...के कमरे में ही गुजारी।

अगली सुबह वह होज काजी पहुंचा जहां उसकी भेंट कौशिक व
...शर्मा से हुई। तीनों एक दुकान में गए। वहां से कौशिक ने एक
टेलीफोन किया। एक घंटे बाद वहां काली डी० एल० वाई० ५४४
की टैक्सी आ पहुंची। इस बार भी ड्राईवर था—रामजीलाल।
कार में चारों कनॉट प्लेस गए जहां वे कुछ देर तक [illegible] देखते
रहे।

ा का शब्द सुनते ही रामकिशन कांप-सा गया। वह डरी-डरी
े कौशिक की ओर देखने लगा।

शिक ने उसे और डराते हुए धमकी दी, "यदि तुमने यह काम
या तो तुम दिल्ली से वापिस जिन्दा नहीं जा सकोगे। तुम मुझे
नते। तुम असफल रहे तो तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।"

शिक की ये धमकियां सुनकर रामकिशन और भी डर गया।
कुछ बोला ही न गया।

ब कौशिक ने रामकिशन को धन का लालच देते हुए फुसलाने
शिश की, "यदि तुमने यह काम कर दिया तो तुम्हें मैं ढेरों रुपया

देखो, मैं बहुत ही गरीब आदमी हूं। मैं यह काम नहीं कर सकता।"
शन ने दबाते स्वर में कौशिक से कहा।

इस पर कौशिक ने फिर अपनी धमकी दुहरा दी, 'अगर तुमने
नहीं किया तो तुम जिन्दा न रह सकोगे।"

रामकिशन चुप रहा और कुछ सोचने लगा। वह डर गया था।
कौशिक ने समझा कि उसकी धमकी काम कर गई है। अतः वह उसे
टेंड पर ले गया और चालीस रुपए थमाते हुए बोला, "यहां से तुम
गाज़ियाबाद जाओ और वहां घंटाघर के निकट चाकू की दुकान
से एक चाकू खरीद लाओ। देखो, भागने की कोशिश मत करना।"

रामकिशन गाजियाबाद गया और नियत दुकान से आठ रुपए में
चाकू खरीद कर वापिस दिल्ली कैंट पहुंच गया। वह रात उसने
...के कमरे में ही गुजारी।

अगली सुबह वह हौज़ काज़ी पहुंचा जहां उसकी भेंट कौशिक व
...त शर्मा से हुई। तीनों एक दुकान में गए। वहां से कौशिक ने एक
फोन किया। एक घन्टे बाद वहां नयी डी० एल० वाई० ५९८
...की टैक्सी आ पहुंची। इस बार भी ड्राईवर था—रामजीलाल।
...बार वे चारों कनाट प्लेस गए जहां वे कुछ देर तक मार्केट देखते
...े रहे।

और रामकिशन तो सीढ़ियां चढ़कर ऊपर गए जबकि रामजीलाल खड़ा रहा।

...शिक रामकिशन को एक कमरे में ले गया जहां दीवार पर कुछ ...टक रही थीं। उनमें डा० जैन राष्ट्रपति महोदय से खड़े हो हाथ ...रहे थे।

...तुम्हें घबराने की कोई जरूरत नहीं। देखा, डाक्टर बहुत बड़े ...हैं।" कौशिक ने रामकिशन के मन से भय निकालने के लिए ...न्त्वना देते हुए कहा।

...गर रामकिशन आश्वस्त नहीं हुआ। उसका डर निकला नहीं। ...कौशिक के आगे हाथ जोड़ते हुए कहा, मैं ऐसा काम नहीं कर ...।"

...कौशिक ने उसकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया और डा० जैन के ...र चौधरी को बुलाकर कहा, "इनको मा के आंखों का आपरेशन ...है। तुम इन्हें डाक्टर साहिब की कोठी में रात सोने के लिए जगह ...।" चौधरी ने हां कर दी।

इसके बाद कौशिक रामकिशन को डा० जैन की कोठी में ले गया। रामकिशन ने डा० जैन की कोठी में हो गुजारी। विदा होने से पहले ...क ने उसे इशारों में समझाया कि आज की रात वह हर हालत में ...जैन का खात्मा कर दे। इससे बढ़िया अवसर हाथ न आएगा।

मगर रामकिशन अपनी कोठरी में घुसते ही गहरी नींद में सो गया।

अगली सुबह जब रामकिशन की नींद खुली तो वह काफी तरो-ताजा ...उसमें कुछ आत्मविश्वास भी आ गया था। उसने तय कर लिया कि हर हालत में दिल्ली से भाग जाना चाहिए, नहीं तो कौशिक उसको ...गा नहीं।

...उसने डिफेंस कालोनी से बस पकड़ी और डिलाइट सिनेमा पर उतर ...। वहां से उसने बस स्टैंड आने के लिए स्कूटर किया।

...मगर संयोग की बात थी कि हौज काजी के निकट कौशिक ने उसे स्कूटर ...जाते हुए देख लिया। कौशिक जोरों से चिल्लाया। स्कूटर रुक गया।

कौशिक रामकिशन को गालियां देते हुए उसे होटल वालों के कमरे में ले गया। कमरे में घुसते ही रामकिशन कौशिक के पैरों पर गिर गया और उससे प्रार्थना करने लगा कि उसे ...

मगर कौशिक माना नहीं, "तुम यहीं रहो। आज ... रामजीलाल के घर पर गुजारना। देखो, भागने ... वरना अंजाम बुरा होगा।"

और रामकिशन को रामजीलाल के घर ले जाया गया।

कौशिक को अब लगने लगा था कि विद्या जैन की हत्या रामकिशन के बस का नहीं। उसने टैक्सी ड्राइवर रामजीलाल से की तो उसका भी यही ख्याल था। "तुम इसे जाने दो। मैं ... लिए तुम्हें एक अन्य आदमी से मिलवाऊंगा।" रामजीलाल ने कहा। कौशिक मान गया।

अगले दिन ही कौशिक ने रामकिशन को दिल्ली से जाने को कहा साथ ही यह धमकी दी, "अगर तुमने इस बारे में किसी को ... मैं तुमसे निबट लूंगा।"

रामकिशन ने राहत की सांस ली और बस पकड़ कर ... चरखी-दादरी पहुंच गया। रास्ते में उसने वह चाकू एक ... दिया।

इस तरह विद्या जैन एक बार फिर मौत की गिरफ्त में ... रह गईं।

आखिरी दांव—२५ हजार में

रामकिशन के जाने के बाद कौशिक ने टैक्सी ड्राइवर रामजीलाल से पूछा 'बताओ, अब क्या करें? तुम मुझे कौन से आदमी से ... की बात कह रहे थे?"

"अभी जल्दी क्या है। सब्र करो। मैं तुम्हारा काम ... बहुत बढ़िया ढंग से।" रामजीलाल ने कहा।

"नहीं, नहीं। मुझे काम पूरा करवाना है, और ...

म मुझे फौरन उस आदमी से मिलवाओ।" कौशिक ने बेसब्री से हा।

कौशिक का बेसब्र होना वाजिब भी था। उसकी छुट्टियां ४ दिसम्बर, ९७३ को खत्म हो रही थीं। और आज १ दिसम्बर बीत चली थी अभी क विद्या जैन जीती-जागती इस दुनिया में मौजूद थी। कौशिक दृढ़-तिज्ञ था कि हर हालत में छुट्टियां खत्म होने से पहले विद्या जैन ी हत्या करवा देनी है। उसे मालूम था कि अब आगे छुट्टियां नहीं लेंगी।

रामजीलाल ने कौशिक की बेसब्री देखी तो उसने तत्काल उसकी हायता करने का निश्चय कर लिया।

रामजीलाल भी अब कौशिक के साथ आ मिला था। यों रामजीलाल ा राकेश कौशिक से पुराना परिचय था। वह श्री धर्मवीर मल्होत्रा ी टैक्सी कम्पनी में डी० एल० वाई० ५४४ नामक टैक्सी चलाता था। ी राकेश कौशिक उसे काफी पहले अपने विश्वास में ले चुका था। र रामकिशन के भाग जाने के बाद उसने इस कांड में सक्रिय भूमिका भानी शुरू कर दी।

रामजीलाल अंगपुरा-भोगल के निकट एक झोपड़ी में रहता था। (अंगपुरा-भोगल के ही एक अन्य व्यक्ति कल्याण गुप्ता को जानता । उसका ख्याल था कि कल्याण गुप्ता कौशिक की समस्या को सुलझा ा। अतः उसने उसी दिन कल्याण गुप्ता से बात की।

कल्याण गुप्ता कुछ पल सोचता रहा। फिर उसने कहा, 'मैं तुम गों को भागीरथ से मिलवाता हूं। वह जरूर कोई न कोई इन्तजाम : देगा।"

भागीरथ घोघी गांव (बल्लभगढ़) में एक फार्म चलाता था। कल्या ा से उसका परिचय काफी पुराना था। वैसे भी कभी-कभी कल्याण के फार्म पर ट्रैक्टर चलाया करता था।

कल्याण गुप्ता राकेश कौशिक व रामजीलाल को भागीरथ के पा ले गया।

"डाक्टर ! आज हम लोग आपके क्लीनिक चलेंगे, आपके साथ।" रामसिंह ने कहा।

डा० जैन चाहते हुए भी अपने अतिथि को टाल न सके। कुछ सोचते हुए उन्होंने हां कर दी।

नाश्ते के बाद डा० जैन अपने कमरे में कपड़े बदलने चले गए। पीछे-पीछे विद्या जैन भी आ गई। जाने दोनों में क्या बात हुई कि कुछ देर बाद सारी कोठी में विद्या जैन की कर्कश आवाज गूंजने लगी।

डाक्टर ठहरे नहीं और जल्दी-जल्दी बाहर निकल आए। कार के पास पहले ही रामसिंह आदि उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

डाक्टर का बिगड़ा मूड देखकर किसी को कुछ पूछने की हिम्मत न हुई।

कार छह आदमियों को लिए हुए चांदनी चौक की ओर चल पड़ी। डा० जैन, उनका ड्राइवर चौधरी, एक अन्य नौकर, रामसिंह व उसका भांजा और किरनबाई डा० जैन के साथ ही गए थे।

रास्ते भर डाक्टर अत्यन्त गम्भीर रहे। वह चेहरे से अत्यन्त दुखी लग रहे थे। उन पर एक रंग आता, एक जाता। ओह! यह भी कोई जीवन है!

जब डा० जैन क्लीनिक पहुंचे तो वहां पहले से ही काफी मरीज बैठे उनका इन्तजार कर रहे थे।

"मुझे आज कुछ आपरेशन करने हैं? तुम लोग कहीं घूम फिर आओ।" डा० जैन ने अपने अतिथि रामसिंह से कहा।

और रामसिंह, उसका भांजा व किरनबाई लाल किला देखने चले गए।

अब तक डा० जैन कुछ संयत हो चुके थे। क्लीनिक में घुसते ही डा० जैन एक डाक्टर बन चुके थे। वह मरीजों में उलझ गए।

अचानक जोर-जोर से टेलीफोन की घन्टी बजने लगी। डाक्टर ने बड़े अनमने ढंग से फोन उठाया। मगर दूसरी तरफ की आवाज सुनते ही उनके चेहरे पर मुस्कराहट तैर गई। वह आवाज किसी महिला की

था-राकेश कौशिक। वह आकर्षक महिला थी, चन्द्रेश शर्मा। अन्य लोग भागीरथ, रामजीलाल, कल्याण गुप्ता, करतार सिंह व उजागर सिंह।

चन्द्रेश बार-बार अपनी कलाई में बंधी घड़ी को देखती। शायद उसे किसी का इन्तजार था।

वह कौन था जिसे आना था?

कहते हैं कि कुछ देर बाद रेस्तरां में डा० जैन ने प्रवेश किया। एक क्षण गेट पर खड़े होकर उन्होंने इधर-उधर देखा, फिर सीधे उस मेज की ओर लपके गए, जहां वे सातों बैठे थे।

डाक्टर ने कुरसी संभाली तो राकेश कौशिक उनके और करीब खिसक आया। वह डा० जैन के कानों में कुछ देर तक खुसर-फुसर करता रहा और डा० जैन चुपचाप सुनते रहे।

कौशिक ने अपनी बात समाप्त की तो डा० जैन उजागर सिंह की ओर मुखातिब हुए, "घबराने की कोई बात नहीं। तुम्हें समुचित इनाम मिलेगा। मैं केस को संभाल लूंगा।" इतना कहते ही डा० जैन ने महात्मा बुद्ध की सी मुद्रा में हाथ ऊंचा किया और उठ खड़े हुए।

डा० जैन के उठते ही चन्द्रेश भी उठ खड़ी हुई।

दोनों एक साथ रेस्तरां से बाहर निकले।

इस समय शाम के पांच से अधिक का वक्त था।

खुदा को मार तुम पर

रेस्तरां से निकल कर डा० जैन सीधे क्लीनिक पर पहुंचे। चन्द्रेश शर्मा उनके साथ थी।

डाक्टर कुरसी पर बैठ गए। सामने बैठ गई चन्द्रेश शर्मा।

एकाध पल डा० जैन अपनी प्रेमिका की आंखों में देखते रहे। चन्द्रेश मुस्करा रही थी, जबकि डा० जरा विचलित थे।

चन्द्रेश ने अपने प्रेमी का हाथ पकड़ा और आहिस्ते से दबा दिया। डा० जैन के रक्त में जैसे उबाल आ गया। वह फिर पहले जैसे तरो-ताजा हो गए।

डा० जैन ने अपनी बात का नम्बर मिलाया। उधर घंटी बजी, मगर किसी ने फोन नहीं उठाया।

बुदबुदाते हुए डा० जैन ने फोन रख दिया।

"अब फिर मिलाओ।" चन्द्रेश ने आग्रह किया।

डा० जैन ने पुनः नम्बर मिलाया।

एकाध मिनट के बाद किसी ने फोन उठाया। उधर से [illegible] की आवाज आई।

डा० जैन आवाज पहचान गए। वह प्रेम कुमार था।

"यह मेरी अनुपस्थिति में घर में क्या कर रहा है?" वे बुदबुदाये। "प्रेम को मार तुम [illegible]। कौशल्या मैडम को बुलाओ।" उन्होंने कहा।

कुछ देर बाद उधर से एक महिला की आवाज आई, [illegible] भरी और अलसाई सी।

"कहो? क्या कहना है?" मिसेज जैन ने पूछा।

"देखो। तुम सात बजे तक तैयार रहना। मैं यहां से [illegible] रहा हूं। हमें कहीं चलना है।"

"मगर, डार्लिंग। शाम को तो ....।"

"मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। तुम हर हालत में सात ब[illegible] तैयार रहना।" डा० जैन ने जरा सख्त आवाज में कहा और फोन [illegible] दिया।

चन्द्रेश के चेहरे पर एक मुस्कान तैर गई।

इतने में रामसिंह उसका भाजा या किरनबाई भी घूम-फि[illegible] क्लीनिक में आ पहुंचे।

थोड़ी देर बाद डा० जैन के क्लीनिक से एक कार स्टार्ट हुई।

कार में ६ लोग सवार थे। अगली सीट पर ड्राइवर चौधरी, [illegible] जैन व चन्द्रेश शर्मा। पिछली सीट पर थे—रामसिंह, उसका [illegible] किरनबाई।

इस समय शाम के लगभग साढ़े छह बज रहे थे। सड़कों पर

ी थीं। काफी अंधेरा घिर आया था।
त की सुइयां बड़ी तेजी से खिसक रही थीं।
जैसे ही कार डिफेन्स कॉलोनी पुल के पास पहुंची कि डा० जैन ने अपने
रामसिंह से कहा, "हमें जरा थोड़ी देर के लिए कहीं और जाना
प लोग यहीं उतर जाइए और घर पहुंचिए। हम भी आ रहे हैं।"
तः रामसिंह, उसका भांजा तथा किरन बाई वहीं उतर गए।
ोड़ा आगे जाकर डा० जैन ने अपने ड्राइवर चौधरी को भी उतार
"तुम खाना खाकर घर चले आना।" यह कहते हुए डा० जैन
र स्टार्ट कर दी।
अगले ही क्षण कार एक झटका लेकर आगे बढ़ गई। एकान्त पाते
न्द्रेश डा० जैन से सट गई। उसके गर्म जिस्म ने डा० जैन की रगों
गल सा दिया। उनका एक हाथ व्हील पर था तो दूसरा चन्द्रेश की
पर।
चन्द्रेश का एक हाथ डा० के कन्धे पर था तो दूसरा जांघ पर।
पुल के पार एक क्षण के लिए डा० जैन ने कार रोकी। और रात
अंधेरे में दो बदन आपस में गुंथ गए।
बाहर ठंड बढ़ रही थी। मगर कार की फिज़ा गरमा उठी।
आसपास के उस सुरमई अन्धेरे में कुछ सिसकारियां तैर गईं।
अगले ही क्षण कार फिर खिसक पड़ी।
अपनी कोठी से कुछ दूर पर डा० जैन ने चन्द्रेश शर्मा को उतार

और चन्द्रेश कार से उतर कर रात के अन्धेरे में कहीं गुम हो

डा० जैन ने अपनी कार आगे बढ़ाई और अपनी कोठी के पास पहुंच

उन्होंने कार अपनी पड़ोसी श्रीमती शीला शर्मा के घर के आगे
की। उस वक्त वहां अन्धेरा छाया हुआ था।
डा० जैन पैदल चलकर कोठी की ओर बढ़े। उन्होंने फाटक खोला

नियत स्थान पर रामजीलाल, भागीरथ व कल्याण गुप्ता उनकी से ही इन्तजार कर रहे थे।

"रामजी ! तुम बैठो।" कौशिक ने रामजीलाल को अपने साथ लिया और कल्याण गुप्ता और भागीरथ को सीधे डिफेन्स कालोनी े को कहा।

पौने सात बजे के लगभग टैक्सी डिफेन्स कालोनी पहुंच गई। डा० ी कोठी से लगभग ८० कदम की दूरी पर उसे एक अन्धेरे में खड़ा दिया गया।

इतने में चन्द्रेश भी वहां आ पहुंची। उसने आते ही उन लोगों को त किया कि डाक्टर की कार बाहर खड़ी है। वह अपनी पत्नी को र लाता ही होगा।

करतार व उजागर टैक्सी से बाहर निकले तो चन्द्रेश ने उन्हें साव- करते हुए कहा, "ध्यान रहे। डा० जैन को जरा भी चोट नहीं नी चाहिए।"

अगले ही क्षण करतार व उजागर रात के अंधेरे में खो गए।

कुछ ही देर बाद भागीरथ व कल्याण गुप्ता भी वहां आ पहुंचे। शक ने उन्हें अपने नियत स्थान पर जाकर खड़े होने को कहा। वे गए।

चन्द्रेश ने रामजीलाल को साथ लिया और वे दोनों पास की एक गली चले गए।

उधर टैक्सी मे राकेश कौशिक ड्राइवर ओम प्रकाश की बातों में ाए रहा।

लगभग सात बजे के करीब डा० जैन अपनी पत्नी को लिए हुए जैसे ारर की ओर बढ़े कि नाले के पास छुपे हुए करतार व उजागर विद्या धर टूट पड़े। करतार ने उसे दबोच लिया जबकि उजागर ने उस पर- महिला पर चाकू से वार करने शुरू कर दिए। सारा मामला हो ीन मिनट में निपट गया।

इधर करतार व उजागर अपना काम खत्म करके भाग रहे थे, उधर

डा० ५

डा० जैन महाशया के लिए चिल्ला रहे थे। इसी भगदड़ में च
जेब से चिरंजीव को एक मोती निकल कर सड़ने में गिर गई।

वहां से भागकर करतार व उजागर सीधे टैक्सी की तरफ
हांफते हुए वे यह उसमें बैठ गए और ड्राइवर को टैक्सी जल्दी
के लिए कहा। और हत्यारों को लिए हुए टैक्सी चक्र
डिफेंस कालोनी की सीमा पार कर गई।

जैसे ही टैक्सी लोधी कॉलोनी के पास पहुंची कि उजागर
सिंह कालेज के निकट की झाड़ियों में वह खून से सना चाकू
वहीं ये दोनों हत्यारे टैक्सी से उतर गए। इन्होंने फिर एक
पकड़ी, बदरपुर पहुंचे और रात वहीं गुजारी। अगली सुबह
बल्लभगढ़ के लिए बस पकड़ी। बस में ही उन्हें कल्याण गुप्ता
रथ मिल गए। संभवतः उनमें यह पहले ही तय हो चुका था।

इस तरह चारों बल्लभगढ़ पहुंच कर भागीरथ के कमरे
एकाध दिन बाद करतार व उजागर अपने गांव चले गए।

उधर जब विद्या जैन की हत्या करके करतार व उजागर
चन्द्रेश एवं रामजीलाल भी भाग खड़े हुए। रास्ते में उन्हें कल्या
और भागीरथ मिले।

"यहां से भागो, काम पूरा हो गया है।" चन्द्रेश ने भागीरथ
और हांफती हुई रामजीलाल के साथ पेट्रोल पम्प की तरफ
चली गई। वहां से उसने टैक्सी पकड़ी और हौज काजी पहुंच गई

कहते हैं कि उसी रात चन्द्रेश ने हौज काजी के एक आदमी
था कि काम पूरा हो गया है।

और सचमुच काम पूरा हो गया।
विद्या जैन की हत्या हो गई थी।

सेशन से पहले

विद्या जैन हत्याकांड से सम्बन्धित सारे अभियुक्त पकड़े जा

मजोलाल मुखबिर बन गया था और तफतीश पूरी हो चुकी थी। अतः
उस ने ४ मार्च, १९७४ को अतिरिक्त चीफ ज्युडिशियल मजिस्ट्रेट,
बी० डी० बंसल की अदालत में चालान पेश कर दिया।

उधर डा० जैन को हर्निया की शिकायत हो गई। उनके स्वास्थ
लिए यह जरूरी समझा गया कि हर्निया का आपरेशन किया जाये।
० जैन ने इच्छा जाहिर की कि उनका आपरेशन प्राइवेट क्लीनिक मे
या जाए। मगर अभियोग पक्ष ने इसका विरोध किया। अन्ततः डा०
न का आपरेशन दिल्ली के इर्विन अस्पताल में किया गया। शीघ्र
। स्वास्थ लाभ करके डा० जैन पुनः तिहाड़ जेल भेज दिए गये।

२३ अगस्त, १९७४ को चीफ ज्युडिशियल मजिस्ट्रेट की अदालत मे
क्सी ड्राइवर रामजीलाल ने, जो कि मुखबिर बन चुका था, विद्याजैन
त्याकांड के सारे षड्यन्त्र को गाथा बयान कर दी। रामजीलाल का
यान सुनने के लिए दर्शकों को भारी भीड़ अदालत में आ जुटी थी।
गेर्ट मे सातों अभियुक्त—डा० एन० एस० जैन, चन्द्रेश शर्मा, करतार
सह, उजागर सिंह, राकेश कौशिक, भागीरथ व कल्याण गुप्ता—बैठे
। एक-एक करके रामजीलाल ने सभी को शिनाख्त किया। उस वक्त,
कहते हैं कि थके-थके से डा० जैन एकटक रामजीलाल को देख रहे थे।
न्द्रेश शर्मा चेहरा नीचे किए बैठी थी। कौशिक की आँखें मुंदी हुई थीं।
करतार सिंह व उजागर सिंह रामजीलाल को घूर रहे थे, जबकि भागीरथ
कल्याण गुप्ता निश्चिन्त से बैठे थे।

दर्शकों को ज्यादातर निगाहें चन्द्रेश शर्मा पर टिकी हुई थीं। मगर
न्द्रेश की नजर नीची थी। कभी-कभी उसकी आंखें ऊपर उठतीं और
१० जैन का स्पर्श कर के फिर नीचे गड़ जातीं।

कुछ दिन की सुनवाई के बाद 'विद्या जैन हत्याकांड' का मुकदमा
दान सुपुर्द कर दिया गया।

इस दर्मियान एक मानवीय दुर्घटना हो गई। चन्द्रेश के वृद्ध पिता श्री
पिचन्द शर्मा अपनी पुत्री की बदनामी ज्यादा दिन तक न सह सके। वह
जिधर भी निकलते, लोगों की उंगलियां उठ जातीं—'वह देखो, चन्द्रेश
हाँ

तीसरी मंजिल पर दिल्ली के जिला व सेशन जज श्री के० एस० सिद्धू ...। अदालत है। सामने व ऊपर की सीढ़ियाँ, अदालत के सामने का बरा-...डा, बाईं तरफ का गलियारा—सब जगह भीड़ का सैलाब उमड़ आया ...और अदालत के कमरे का तो हाल ही मत पूछिये। दर्शकों, पत्रकारों, ...कीलों व पुलिस अधिकारियों से वह ठसाठस भरा हुआ था। यों उन ...दिनों दिल्ली में खासी सर्दी थी। मगर कमरे में एक अजीब-सी उमस, ...और अजीब-सी तपिश थी। सारा वातावरण एक विचित्र-सी उत्तेजना ... उबला पड़ रहा प्रतीत होता था।

"चलो लिफ्ट से चलते हैं," मैंने कहा, मगर वहां इतनी लम्बी लाइन ...सोचा। क्या करें?

अचानक ख्याल आया कि क्यों न ब्राइम ब्राच के रास्ते से पीछे से ...या जाय? लम्बा रास्ता तय करके दूसरे दरवाजे से घुसे। तीसरी ...जल पर पहुंच कर गलियारे को नापते जा रहे थे कि बीच में ही रुक ...ना पड़ा। सामने बहुत ही ज्यादा भीड़ थी। लोग गर्दनें उठा-उठा ...र पीछे की तरफ देखते जा रहे थे।

मैंने भी पीछे देखा। डा० जैन लम्बे-लम्बे डग भरते आ रहे थे। ...के साथ-साथ पुलिस कान्स्टेबल चल रहा था।

कान्स्टेबल कभी आगे आकर, कभी पीछे आकर और कभी इधर-...र होकर डा० जैन के लिए रास्ता बना रहा था। और डा० जैन अपनी ...ऐ टिकटिकाते हुए बड़ी तेजी से आगे बढ़े आ रहे थे।

मैंने कैमरामैन को इशारा किया 'संभालो कैमरा!' अचानक सामने ...देश आ गई थी। मगर हमारे छायाकार क्लिक न कर सके। जनाब ... भ्रम से हो गए थे। उन्होंने चन्द्रेश को पहले कभी न देखा था। चन्द्रेश ...रा हथकड़ी के थी। वह अनुमान न कर सका कि यही चन्द्रेश है। ...! चन्द्रेश भी खूब सज-संवर कर आई थी। उसने समझा कि यह तो ...ई वकील है।

मगर अगले ही क्षण वह संभल गया। फिर तो उसने पीछे आते ...रिशक, भागीरथ व रघुनाथ गुप्ता को फौरन कैमरे में बन्द कर लिया।

धा जैन की हत्या व बाद मे डा० जैन से विवाह करने की योजना
ई और बोली—"हत्यारे का इन्तजाम हो गया है। बस, तुम्हारी
की जरूरत हमें पड़ेगी। यदि तुमने साथ दिया तो तुम्हें कार इनाम
मिलेगी। साथ ही पक्की नौकरी भी।"

"मैं एक गरीब आदमी होने के कारण लालच में आ गया और मैंने
अपनी कार का प्रयोग कर लेने के लिए हामी भर ली", रामजीलाल
भरी अदालत को बताया।

"अगले दिन मैं फिर टैक्सी लेकर हौज काजी गया। इस वक्त मेरे
य श्री धर्मवीर मल्होत्रा भी थे। वहां मुझे एक जवान लड़का मिला।
थ में कौशिक व चन्द्रेश भी थे। बाद में मुझे उस जवान लड़के का नाम
ताया गया—रामकिशन। मैं उन सब लोगों को अपनी टैक्सी में कनॉट-
स ले गया, जहां धर्मवीर मल्होत्रा कौशिक से १४५ रुपए लेकर चले
ये। कुछ देर तक कौशिक मोनियाखान में 'स्पेयर पार्ट्स डीलर' से कुछ
र्जों के बारे में बातचीत करता रहा। फिर वह सब लोग पुनः कनॉट
लेस लौट आए और यार्क रेस्टोरेन्ट में बैठे। वहीं कौशिक ने मुझे बताया
क चन्द्रेश डा० जैन की मित्र है। डाक्टर की पत्नी की हत्या करनी है,
ताकि चन्द्रेश डाक्टर से शादी कर सके। कौशिक ने रामकिशन से कहा
कि यह काम रामकिशन को करना है।

"जब २९ नवम्बर को मुझे पता चला कि रामकिशन ने हत्या नहीं
की तो मैंने उसे गालियां सुनाईं," रामजीलाल ने अपनी गवाही देते हुए
बताया। १ दिसम्बर को पुनः कोशिश की गई, मगर उस दिन भी रामकिशन
कोठी के आसपास यों ही घूम कर वापस आ गया। तब मैंने कौशिक को
सलाह दिया कि यह काम रामकिशन के बस का नहीं है। मैं तुम्हें एक अन्य
आदमी से मिलवाऊंगा। फिर मैं कौशिक को कल्याण गुप्ता के पास ले
गया जिसने उन्हें भागीरथ से मिलवाया। और भागीरथ उन्हें सेसोन
रोड के करतारसिंह व उजागरसिंह के पास ले गया। हमारे सामने ही
कौशिक ने उन दोनों से पूछा 'क्या वे एक डाक्टर की पत्नी का कत्ल कर
सकते हैं।' उजागर के हामी भरने पर कौशिक के पैसे के बारे में पूछा
था।

पुलिस ने सारे तथ्य दर्ज नहीं किये

…न्द्रेश के वकील हंसराज भारद्वाज मुखबिर रामजीलाल से …कर रहे थे।

'तुमने चन्द्रेश द्वारा कार व नौकरी के प्रलोभन का जिक्र किया …गर पुलिस केस-डायरी में ११ दिसम्बर १९७३ को दर्ज किए गए …े बयान में इस बात का कोई उल्लेख नहीं है?" भारद्वाज ने …ीलाल से पूछा।

"इस सम्बन्ध में मेरा स्पष्टीकरण तो यही है कि पुलिस ने ये तथ्य …ी नहीं किये।" मुखबिर का सीधा उत्तर था।

"मगर पुलिस केस डायरी में तो ऐसे कई तथ्य नहीं हैं?"

…मजीलाल ने स्वीकार किया "पुलिस की पूछताछ के दौरान उसने …बातें छुपाई थीं। मैंने पुलिस को नहीं बताया था कि १ दिसम्बर …ं चन्द्रेश शर्मा को कार में हौज काजी से कनॉट प्लेस ले गया था। …ही मैंने म्युनिख रेस्टोरेन्ट में हुए षड्यन्त्र का भी जिक्र नहीं किया …यह सब मैंने इसलिए किया था क्योंकि ११ दिसम्बर को मैं मुखबिर …बना था। और मैं दूसरी तरफ के लोगों से प्रभावित था। मगर …मैंने उपर्युक्त सभी तथ्य मेजिस्ट्रेट के सामने बयान कर दिये थे।"

इधर-उधर के छोटे-मोटे प्रश्नों के बाद भारद्वाज ने एक झटके …मजीलाल से पूछा, "क्या तुमने ११ दिसम्बर को पुलिस को बताया …कि तुमने श्रीमती विद्या जैन पर एक के बाद एक चाकू के प्रहार होते …?"

रामजीलाल ने नकारात्मक उत्तर दिया।

पुलिस की केस डायरी एक महत्वपूर्ण दस्तावेज लग रहा था। अतः …द्वाज ने जज श्री सिद्धू से प्रार्थना की कि उसकी एक प्रति उन्हें दी …ए।

भारद्वाज की इस मांग का विरोध करते हुए अभियोग पक्ष के वकील …नलाल अरोड़ा ने तर्क दिया कि केस डायरी में दर्ज रामजी का 'एडी-

ा कौशिक को शर्मा साहिब कहता था) को अपनी टैक्सी डी० एल० में धरली-दावरी ले गया था ? रामजीलाल ने कहा, "मुझे पक्की याद नहीं है कि उस रात (११ दिसम्बर) मैंने क्या कहा था और हीं कहा था।" साथ ही उसने स्वीकार किया कि ११ दिसम्बर को को पुलिस की पूछताछ के दौरान उसने सभी तरह की सही और बातें पुलिस को बताई थीं।

"क्या तुमने ११ दिसम्बर को पुलिस को बताया था कि राजेश क ने विद्या जैन की हत्या के लिए उजागर सिंह को २५ हजार ा देना स्वीकार किया था ?" खां का अगला प्रश्न था।

"मैंने उस रात २५ हजार रुपयों का उल्लेख नहीं किया था।" रामलाल ने उत्तर दिया।

अन्य कई प्रश्नों के उत्तर में रामजीलाल ने अदालत को बताया कि ा जैन की हत्या से लगभग १० हफ्ते पहले वह किस तरह कौशिक धरली-दावरी आदि जगहों में ले गया था। उसने यह भी स्वीकार ा कि धरली-दावरी के निकट उसने टैक्सी का मोटर बन्द कर दिया और बाद में उसने उसे चालू कर दिया था। जिसके एवज में कौशिक उसे कुछ रकम देने का वायदा किया था।

अन्त में जब कौशिक के वकील ने रामजीलाल से यह पूछा कि कहीं सजा से बचने और पुलिस के दबाव में आकर तो गलत बयान नहीं रहा है ? उसने उत्तर दिया, "मैं जब भी बीड़ी मांगता, तो पुलिस दरों में मुझे पीटा जाता। यदि वह पीट कर अपनी इच्छानुसार से बयान दिलवाने को मजबूर करते, तो अंजाम वहीं अच्छी तरह नते हैं।" रामजी के इस उत्तर को सुनकर सारी अदालत में हंसी लहर दौड़ गई।

इरशाद उल्लाह खां के बाद करतार सिंह के वकील सुरेशचन्द्र भार्गव रामजीलाल से जिरह शुरू की।

श्री भार्गव के एक प्रश्न के उत्तर में रामजीलाल ने अदालत को बताया "मैं मुखबिर इसलिए बना क्योंकि मुझे जेल में एक बन्दी ने ऐसा

विपिन बिहारीलाल के बाद अन्य बचाव वकीलों ने भी रामजीलाल
जिरह की।

हैलो। देवी।

रामजीलाल के बाद अभियोग पक्ष ने एक अन्य महत्वपूर्ण गवाह
किया—ओमप्रकाश। २० वर्षीय ओमप्रकाश यादव ट्रांसपोर्ट कम्पनी
टैक्सी ड्राइवर था। वह अपनी टैक्सी डी०एल० वाई० ५५२ से कौशिक,
तार व उजागर आदि को डिफेंस कालोनी ले गया था और उसी को
सी में विद्या जैन की हत्या करने के बाद अभियुक्त भागे थे।

ओमप्रकाश ने सेशन जज की अदालत मे २९ जनवरी, १९७५ को
भी गवाही देते हुए बताया, "मेरे मालिक रतनलाल ने ४ दिसम्बर,
१९७३ की शाम सवा पांच बजे के करीब कहा कि किसी राकेश शर्मा
(कौशिक) ने धरती-चादरी जाने के लिए टैक्सी बुक कराई है। मुझे
पाल कनॉट प्लेस के यार्क रेस्टोरेन्ट में पहुंचने को कहा गया था।

"मैं कुछ ही देर में नियत स्थान पर पहुंच गया। मगर मुझे पता न
कि कौशिक कहां मिलेगा, अतः मैं रेस्टोरेन्ट के बाहर खड़ा प्रतीक्षा
ने लगा। लगभग १०-१५ मिनट बाद वहां एक टैक्सी रुकी जिसमें
कौशिक, करतार सिंह व उजागर सिंह उतरे।

यहीं ओमप्रकाश से तीनों अभियुक्तों को शिनाख्त करने को कहा
। मगर वह कुछ गड़बड़ा गया। उसने राकेश कौशिक को राकेश
कहा। करतार को उजागर व उजागर को करतार कहा।
ओमप्रकाश की गलत शिनाख्त से एक क्षण के लिए अदालत में कुछ
राफूसी-सी हुई। कोने में बैठी चन्द्रेश भी उठ कर खड़ी हुई और
जैन चन्द्रेश को घूरने लगें।

ओमप्रकाश का बयान जारी था—"राकेश कौशिक ने मुझसे पूछा
क्या मैं यादव ट्रांसपोर्ट कम्पनी से आया हूं? मेरे 'हां' कहने पर वह
तार व उजागर के साथ टैक्सी में सवार हो गया और मुझे भोगल चलने
के लिए कहा।

पहुंच जायगा।" ओमप्रकाश के इतना कहते ही अभियोग पक्ष के
ल कुन्दन लाल अरोड़ा ने उससे पूछा—"क्या उस व्यक्ति ने यह
ा था कि पैसा कहां से मिलेगा ?"

"मेरे विचार में उसने यह पूछा था कि पैसा डाक्टर से कब
गा ?" ओम प्रकाश का उत्तर था।

ओमप्रकाश ने अपनी गवाही जारी करते हुए कहा, "लोधी रोड
ास ही करतार व उजागर उतर गये और कौशिक ने मुझे दिल्ली कैन्ट
ने को कहा। जब मैंने कौशिक से चरखी-दादरी के प्रोग्राम के बारे में
तो उसने कहा, 'मैंने वह ट्रिप कैंसिल कर दिया है।'

कम्पनी का आफिस दिल्ली कैन्ट के रास्ते में ही पड़ता था। अतः मैं
ी को अपने मालिक के पास ले गया और उन्हें बताया कि दादरी का
कैंसिल कर दिया गया है। कौशिक ने मुझे चालीस रुपये दे दिये।
के बाद कौशिक यह कहकर वहां से चला गया "मैं खुद ही दिल्ली कैन्ट
ा जाऊंगा।"

ओमप्रकाश के बयान के बाद करतार सिंह के वकील सुरेशचन्द्र
ंव ने जिरह शुरू की।

भार्गव—"जब करतार या उजागर ने टैक्सी में कौशिक से रुपयों
मांग की तो क्या तुम्हें सन्देह नहीं हुआ कि ये लोग कोई संदिग्ध काम
के जा रहे हैं ?"

ओमप्रकाश—"इस तरह की बातचीत यात्रियों में आम तौर पर
ती ही रहती है। अतः मैंने उनकी बातों को ज्यादा महत्व नहीं दिया।"

भार्गव के यह पूछने पर कि ४ दिसम्बर की रात को जब डिफेन्स-
ोनी में टैक्सी से करतार व उजागर उतर गये और फिर १०-१५
ट बाद भागते हुए वापिस लौटे तो क्या तुम्हें फिर भी शक नहीं
? ओमप्रकाश ने कहा "नहीं। जब वे वापिस लौटे तो उनके चेहरों
किसी तरह की घबराहट भी नहीं थी।"

ओमप्रकाश ने अदालत को बताया कि उसे पहली बार ११ दिसम्बर
विद्या जैन की हत्या के बारे में पता चला, जब पुलिस उसको ट्रांसपोर्ट

कमरती में उससे मुलाकात करने के लिए गई।

"तो क्या तुमने इस बीच समाचार पत्र नहीं पढ़े जिनमें की हत्या के समाचार बड़ी-बड़ी सुर्खियों में छपे रहते थे?"

ओमप्रकाश ने बड़े सहज ढंग से कहा "मैं अपने काम में इतना रहता था कि मुझे समाचार पत्र पढ़ने की फुर्सत ही नहीं मिल... वैसे भी मेरी बस्ती में समाचार पत्र नहीं आते थे।"

"लेकिन पास वाले टैक्सी स्टैंड पर अन्य टैक्सी ड्राइवर... विद्या जैन की हत्या को लेकर काफी चर्चा होती होगी? ... उन लोगों से इस बीच कोई बात ही नहीं हुई?"

ओमप्रकाश—"पास वाला टैक्सी स्टैंड सरदारों का है ... दारों से मैं आम तौर पर बात नहीं करता।"

ओमप्रकाश के इस जवाब से अदालत में हंसी का दौर... सेशन जज श्री सिद्धू, जो कि स्वयं सरदार हैं, मुस्कराये बिना ... चन्द्रेश भी हंस पड़ी। आज काफी दिनों के बाद उसे अदालत में ... हुआ देखा गया।

"जब हत्या के बाद डिफेंस कालोनी से टैक्सी निकली तो ... टैक्सी में रामजीलाल नहीं था, जब कि आते समय वह साथ ... तुमने कौशिक से रामजीलाल की अनुपस्थिति के बारे में पूछा?"

ओमप्रकाश—"नहीं।"

राकेश कौशिक के वकील इरशाद उल्लाह खां के प्रश्नों के ... ओमप्रकाश ने अदालत को बताया कि उस दिन के ... टैक्सी की सफाई नहीं की। उसे टैक्सी में कहीं खून के धब्बे नहीं ... दिये।

उस दिन के लिए अदालत उठी तो लोग बाहर लपके। पहले चन्द्रेश बाहर निकली। फिरोजी रंग की साड़ी पर वही ... शाल, हाथ में एक थैला। कन्धों पर झूलते हुए बाल। बाहर ... ही उसने बालों को एक झटका-सा दिया और नजरें उठाए ... भीड़ को चीरते हुए निकल गई। आज उसने चेहरा ढंकने की कोशि...

। मूड भी अच्छा लग रहा था उसका।

। डा० जैन सबसे बाद में निकले। संभवतः कोर्ट के अन्दर वह अपने
ों से कुछ विचार-विमर्श कर रहे थे।

बाहर आते ही डा० जैन ने सिगरेट सुलगा लिया। आज भी वह
वाला ही धारीदार कोट पहने हुए थे।

कौशिक ने ही टैक्सी ली थी

अभियोग पक्ष के तीसरे महत्वपूर्ण गवाह श्री धर्मवीर मल्होत्रा थे।
एल० वाई० ५४४ टैक्सी के मालिक मल्होत्रा थे, जिसका ड्राइवर
जीलाल था।

मल्होत्रा ने अदालत में अपनी गवाही देते हुआ कहा, "मैं पहली बार
शक से ९ अक्तूबर, १९७३ को मिला। साउथ एवेन्यू टैक्सी स्टैन्ड
मुझको टेलीफोन मिला कि बरली-दादरी जाने के लिए टैक्सी
हए। मैं वहां गया तो मुझे राकेश कौशिक मिला। उसके साथ एक
का भी थी, मगर मैंने उस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। मैं अपनी
ी डी० एल० वाई० ५४४ एवं ड्राइवर को वहीं छोड़कर चला आया।
समय मैंने कौशिक से बतौर किराया १२० रुपया वसूल किये।

"इसके बाद २६ नवम्बर, १९७३ को मुझे कौशिक का फोन मिला
टैक्सी व ड्राइवर रामजीलाल को कश्मीरी गेट भेज दिया जाय।
वक्त सुबह के ८ बज रहे थे। मैं रामजीलाल को साथ लेकर नियत
पर पहुंच गया। मगर एक घन्टा तक प्रतीक्षा करने के बाद भी
वहां कौशिक न पहुंचा तो हम लौट आये।

"उसी दिन शाम को कौशिक का फोन फिर मुझे मिला, जिसमें उसने
अजमेरीगेट पेट्रोल-पम्प पर फौरन भेजने को कहा। जब मैंने कौशिक
ा कि वह सुबह क्यों नहीं पहुंचा तो उसने जवाब दिया कि वह सुबह
के भी पैसे दे देगा। मैंने रामजीलाल को टैक्सी के साथ भेज दिया।

"रात ११ बजे रामजीलाल वापिस पहुंचा। मैंने उससे पैसों के
में पूछा तो रामजीलाल ने उत्तर दिया कि अगले दिन ११ बजे अज-

मेरी मेड पर फिर टैक्सी चाहिए। उसी वक्त कौशिक गाड़ी बै

"मैं अगले दिन रामजीलाल के साथ अजमेरी-गेट स्टैंड
के मोड़ पर कौशिक मिला। उस वक्त उसके साथ शर्मिष्ठा
मैंने कौशिक से कहा कि मुझे पैसे फौरन चाहिए। इस ...
गली में चला गया। कुछ देर बाद वह लौटा तो उसके
थी। उस महिला ने आते ही मुझे फटकारा कि क्या तुम्हें
पर भी विश्वास नहीं है। इस पर मैंने कौशिक से पूछा—
है कौन?' कौशिक ने बताया, 'यह चन्द्रेश शर्मा है।' चन्द्रेश
इसके बावजूद मैं पैसों के लिए अड़ा रहा। इस पर वे लोग मुझे
प्लेस ले गये।

कनॉट प्लेस में टैक्सी फायरब्रिगेड-बिल्डिंग के पास खड़ी
कौशिक यह कहकर चला गया कि वह अभी पैसे लेकर आता
पन्द्रह मिनट बाद वह लौटा और उसने मुझे १४५ रुपए दिये
लेकर मैं चला गया।

शाम को रामजी लौटा और मुझे ड्यूटी स्लिप दिखा कर
'कौशिक ने अगले दिन भी टैक्सी मांगी है।' इसके पश्चात्
को भी कौशिक ने टैक्सी मांगी। अगले दो दिन तक जब टैक्सी
तो मुझे चिन्ता हुई। मगर ३ दिसम्बर, को मुझे फोन मिला
दिल्ली में ही है। मैं निश्चिन्त हो गया।

"३ दिसम्बर, १९७३ की रात ११ बजे के लगभग रा
टैक्सी लेकर लौटा। उसके साथ कौशिक भी था। कौशिक
के भाड़े का पूरा हिसाब चुका दिया। कौशिक ने जब अगले दिन
भी टैक्सी मांगी तो मैंने कहा टैक्सी ४ दिसम्बर को नहीं मिल
क्योंकि उसका परमिट खत्म हो रहा है। यहीं बात खत्म हो ग

और फिर ११ दिसम्बर को पुलिस मेरे यहां पहुंची और मुझे
कि मेरी टैक्सी विद्या जैन हत्याकांड के सिलसिले में प्र
गई है।"

एक प्रश्न के उत्तर में मल्होत्रा ने अदालत को बताया, "मैं

:टेंसी साफ कर रहा था तो मुझे उसमें से एक 'फिल्मी दुनिया'
त्रिका पड़ी मिली। वह पत्रिका मैंने अपने बच्चों को पढ़ने को
और जब ११ दिसम्बर को पुलिस मेरे पास आई तो मुझे स्मरण
: वह पत्रिका पुलिस के काम की हो सकती है। अतः मैंने वह
पुलिस को थमा दी। उस पत्रिका पर कौशिक की ही हस्तलिपि
त, रोशन, राकेश' आदि शब्द गड़मड़ाकर लिखे हुए थे।
शिक के वकील इरशाद उल्लाह खां जब मल्होत्रा का ध्यान उसके
के सामने दिए गये बयान की ओर दिलाया जिसमें उसने कहा था
२६ नवम्बर को कौशिक से पैसे वसूल करने हौज काजी गया था,
अदालत में उसने कहा कि वह २७ नवम्बर को गया था, तो मल्होत्रा
ने माथे का पसीना पोंछते हुए कहा, "मैंने जो कुछ अदालत में
है वही सही है।"

पुलिस को दिये गए बयान में तुमने कहा था कि तुम्हें पैसे हौज काजी
गए, जबकि अदालत में तुमने कहा कि पैसे तुम्हें कनॉट प्लेस में
"

ल्होत्रा—"मेरा कोर्ट वाला बयान सही है।"

बचाव के वकीलों ने बार-बार मल्होत्रा को उसके पुलिस के सामने
अदालत में दिये गए बयानों की परस्पर विरोधी बातों को लेकर
की कोशिश की।

ल्होत्रा को कई बार कहना पड़ा, "अदालत में दिया गया उसका
सही है। ये त्रुटियां इसलिए हो गईं क्योंकि जब पुलिस मेरे पास
और उन्होंने कहा कि तुम्हारी टैंसी विद्या जैन हत्याकांड में फंसी
से काफी नर्वस हो गया था।"

ी नर्वस वह अदालत में भी था। उस सर्दी के दिनों में भी उसके
पर पसीना छू आया था।

उस दिन वहां अंधेरा था

• जैन की साथ वाली कोठी में श्रीमती शीला सत्ता रहती थीं।

था।"

डा० जैन के वकील बिपिन बिहारी लाल के एक सवाल के जवाब में ... अग्रा ने कहा, "डिफेन्स कालोनी में 'विजिटर्स कार' तक घरों ... पार्क की जाती है।"

रामसिंह के बयान

अभियोग पक्ष को लगा कि हत्यावाले दिन डा० जैन की कोठी पर ... ए अतिथि रामसिंह और उसकी पत्नी किरनबाई जरूर हत्या के ... में कुछ प्रकाश डाल सकेंगे। अतः उन्हें गवाह बनाकर अदालत ... किया गया।

आज भी अदालत रोज की तरह खचाखच भरी हुई थी। दर्शकों ... रामसिंह की पत्नी किरनबाई भी बैठी थी। वह साड़ी में थी। मगर ... रह की गवाही शुरू होने से पहले ही किरनबाई को अदालत से बाहर ... दिया गया, क्योंकि वह स्वयं भी अभियोग पक्ष की गवाह थीं। कुछ ..., मगर मुस्कराती हुई किरन बाई कोर्ट से बाहर चली गई।

व्यवसाय से किसान और उज्जैन निवासी रामसिंह ने अदालत को ... कि वह केवल पांचवीं श्रेणी तक पढ़ा है। लगभग दो वर्ष हुए उसने ... अमरीकन महिला 'कवी' से उज्जैन में ही विवाह किया है। विवाह ... समाज पद्धति से हुआ और उसकी पत्नी ने हिन्दूधर्म ग्रहण कर लिया ... उसका परिवर्तित नाम किरनबाई है।

रामसिंह ने कहा, "मैं डा० जैन को जानता हूं। मेरी सास अमरीका ... नेत्र-विशेषज्ञ है। जब वह पहली बार भारत यात्रा पर आई तो वह ... दो आंखों के आपरेशन के लिए डा० जैन के पास ले गई। मैं इसके ... डा० जैन से नहीं मिला।"

रामसिंह ने इतना ही कहा था कि अभियोग पक्ष के वकील कुन्दन ... अरोड़ा उठ खड़े हुए। उन्होंने सेशन जज से निवेदन किया कि ... ह अपने पहले बयान से बदल रहा है जो कि उसने पुलिस के सामने ... था। श्री सिद्धू ने गवाह के पहले बयान का अध्ययन करके महसूस

ली गई।

रामसिंह के विरोधी गवाह बनते ही बचाव पक्ष के वकीलों के चेहरे उठे। डा० जैन भी संभल कर बैठ गए। चन्द्रेश शर्मा अपनी से उठकर खड़ी हो गई। उसने अपने वकील भारद्वाज को पास ा और उसके कान में फुसफुसाने लगी।

श्री अरोड़ा रामसिंह से प्रश्न पर प्रश्न पूछते गये और रामसिंह ौर पर हर बात से इन्कार करता गया। उसने कहा कि ५ दिसम्बर लिस ने उसका कोई बयान नहीं लिया। उसने इन्कार किया कि ी आँखों के आपरेशन के समय उसकी सास मौजूद थी। उसने इस से भी इन्कार किया कि उसकी पत्नी ने डा० जैन को अपने माता- का अमरीका का पता दिया था।

रामसिंह ने स्पष्ट शब्दों से अपने इस बयान से इन्कार किया कि सम्बर की शाम को उसके साथ डा० जैन की कार में एक महिला ी। उसने कहा 'कार में हम पांचों के अलावा कोई न था।'

रामसिंह ने आगे कहा कि यह गलत है कि उस दिन डिफेंस कालोनी से पहले ही डा० जैन ने कार को रोककर उन्हें उतार दिया था और द उस 'युवा महिला' के साथ अकेले ही आगे चले गए थे। बल्कि ो यह है कि हम पांचों डा० जैन की कार में उनकी कोठी तक थे।

रामसिंह ने इस बयान से मुकरते हुए कहा कि उसने पुलिस को बताया ह जब वे तीनों (रामसिंह, उसका भांजा व किरन बाई) पैदल चल- डा० जैन की कोठी पर पहुंचे तो उस वक्त डा० जैन कोठी के मेन- पर खड़े थे और उनकी पत्नी दरवाजा बन्द कर रही थीं। हमें ही डा० जैन ने विद्या जैन को आवाज दी और आततायियों के अन्दर के बाद दरवाजा बन्द न करने के लिए कहा।'

यह भी गलत है कि उस समय डा० जैन ने हमसे कहा था कि हम लाना खा लें क्योंकि उन दोनों पति-पत्नी को देर हो जाएगी।

रामसिंह ने आगे कहा कि जब हम लोग अन्दर

जाने के बाद भी अरोड़ा ने उसे पेश करने का विचार छोड़ दिया। सेह ही अभियोग पक्ष के लिए सिरदर्द बन गया था।

अदालत की कार्रवाई जब खत्म हुई तो बचाव पक्ष के वकील हंसते बतियाते कोर्ट से निकल रहे थे। डा० जैन के चेहरे पर भी कुछ चन्तता-सी थी। चन्द्रेश भी मग्न थी, जाने किस ख्याल से?

किस्सा रेस्टोरेन्ट का

अभियोग पक्ष के अनुसार ४ दिसम्बर, १९७३ को शाम को चांदनी के न्यूविंग रेस्टोरेन्ट में सातों अभियुक्त मिले थे और विद्या जैन हत्या की योजना को अन्तिम रूप दिया गया था। रेस्टोरेन्ट में डा० भी पधारे थे और उन्होंने षड्यन्त्रकारियों को आश्वस्त किया था। अतः विद्या जैन हत्याकांड-षड्यन्त्र में न्यूविंग रेस्टोरेन्ट की यह ग अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह मीटिंग जहां अन्य अभि- ों को सह-षड्यन्त्रकारी बनाती है, वहीं यह डा० जैन के विरुद्ध न्त्र में भाग लेने का सीधा प्रमाण प्रस्तुत करती है। इसीलिये योग पक्ष रेस्टोरेन्ट-मीटिंग को अदालत में प्रमाणित करने के लिए न्त जागरूक था।

उधर भाग्य ने एक क्रूर मजाक किया। रेस्टोरेन्ट का बेयरा सतीश , जिसने अभियुक्तों की मेज पर सर्व किया था, २० जनवरी, १९७५ एक सड़क दुर्घटना में मारा गया। यह संयोग ही था कि २० जनवरी विद्या जैन हत्याकांड की सुनवाई शुरू हुई थी।

मगर अभी एक और महत्वपूर्ण गवाह बचा था। वह था—कृष्ण- जो उस दिन अभियुक्तों की पास वाली मेजों पर सर्व कर रहा था उसने सतीशचन्द्र की सर्विस में सहायता की थी।

कृष्णलाल की गवाही के समय अदालत में अजीब-सी उत्तेजना खामोशी छाई हुई थी। बचाव पक्ष के वकील कुछ विशेष सचेत से रहे थे। उधर सभी अभियुक्तों की निगाहें गवाह की तरफ लगी थीं। डा० जैन बार-बार अपना चश्मा उतारते और फिर लगा

लेते। मगर चन्द्रेश बिल्कुल खामोश बैठी थी, मगर ...

कृष्णलाल ने अदालत को बताया, मैं ... की उस घटना से पहले से जानता हूँ। दोनों ही रेस्टोरेन्ट में आया करते थे। वे अन्य ग्राहकों की अपेक्षा टिप भी दिया ... चन्द्रेश को मैं २ दिसम्बर से लगभग एक महीना या उससे ... जानता हूँ।"

किस तरह?

"एक दिन मैं काउंटर पर खड़ा था कि इतने में चन्द्रेश ने मुझसे पूछा कि क्या वह व्यक्ति आ गया है जो अक्सर मेरे ... करता है? मैंने उत्तर दिया, वह अभी नहीं आया है। इस ... ऊपर बालकनी में जाकर बैठ गई। इस दिन से पहले मैं उसे ... जानता था, नाम से नहीं। २ और ३ दिसम्बर को चन्द्रेश ... के साथ तीन अन्य व्यक्ति आये थे। भागीरथ व कल्याण ... उसने शिनाख्त कर ली, मगर तीसरे व्यक्ति के बारे में उसने कहा ... अदालत में मौजूद नहीं है।

४ दिसम्बर की मीटिंग का जिक्र करते हुए कृष्णलाल ने ... लोग लगभग ५ बजे रेस्टोरेन्ट आये। उन लोगों के लिए दो ... गईं। सतीशचन्द्र उन्हें सर्व कर रहा था, मगर मैंने पहले उन्हें ... किया था और बाद में प्लेटें उठाई थीं। बिल भी मैंने पेश किया ... कौशिक ने अदा किया और मुझे दो या ढाई रुपए की टिप मिली ...

जब कृष्णलाल से यह पूछा गया कि वे सात लोग कौन ... तो उसने चन्द्रेश, कौशिक, करतार, उजागर, भागीरथ व कल्याण ... की शिनाख्त कर दी। जहाँ तक डा० जैन का प्रश्न है, ... कि मुझे याद नहीं कि उस वक्त डा० जैन रेस्टोरेन्ट में आये थे ... हो सकता है वह आये भी हों।" मगर श्री तिड्डू के कहने पर उस ... जैन की शिनाख्त करते हुए कहा—"मैं पहले से इन्हें जानता हूँ।"

कृष्णलाल के उपर्युक्त बयान ने अदालत में खलबली ... मुखबिर रामजी लाल के अनुसार ४ दिसम्बर को डा० जैन ...

आये थे, जबकि कृष्णलाल ने कह दिया कि उसे स्मरण नहीं कि उस दिन डा० जैन रेस्टोरेन्ट में थे या नहीं। रेस्टोरेन्ट की उपर्युक्त मीटिंग में डा० जैन का शामिल होना उनके विरुद्ध एक बहुत ही तगड़ा प्रमाण था, मगर कृष्णलाल के बयान ने इस प्रमाण के प्रति सन्देह उत्पन्न कर दिया था।

कृष्णलाल अपनी गवाही देते-देते अचानक बहुत बेचैनी महसूस करने लगा। जज महोदय ने उसे कुरसी पर बैठ कर बयान देने को कहा। मगर थोड़ी देर बाद वह फिर एक तरह की घबराहट महसूस करने लगा। अतः जज श्री सिद्धू ने उसे अगले दिन आने के लिए कह दिया।

मैं कोई समाज की जज नहीं

श्रीमती कनक बरमन विद्या जैन की गहरी दोस्त थीं। दोनों साथ-साथ ब्रिज खेला करती थीं। बरमन और जैन परिवारों का एक दूसरे के यहां काफी आना-जाना रहता था। अभियोग पक्ष ने इन्हीं श्रीमती कनक बरमन को सरकारी गवाह बनाकर पेश कर दिया, इस ख्याल से कि वह कुछ अन्दरूनी बातें बताएंगी।

श्रीमती बरमन ने अदालत को बताया कि, "मेरी एक लड़की है। विद्या जैन ने अपने बड़े लड़के अजय के लिए मेरी लड़की पसन्द कर ली। और लोग भी सहमत हो गए, और जनवरी १९७१ में दोनों की सगाई कर दी गई। मगर उसी साल दिसम्बर में यह सगाई तोड़ दी गई, क्योंकि हमारे ख्याल में यह सफल विवाह न होता। हमने अनुभव किया कि हमारे जीवन-मूल्य जैन परिवार से मेल नहीं खाते।

श्रीमती बरमन ने आगे कहा, "विद्या जैन के घर पर मैं कई लोगों से मिली। प्रेम गुप्ता व ए० एल० मंचर से भी मेरा परिचय वहीं हुआ। कोई चार पांच बरस पहले हम लोग श्रीनगर गए हुए थे। वहां हमें डा० जैन, विद्या जैन व प्रेम गुप्ता तथा श्रीमती गुप्ता मिले। वे लोग पहले से ही वहां ठहरे हुए थे। श्रीनगर में मैंने देखा कि प्रेम गुप्ता और विद्या जैन एक दूसरे [illegible] हैं।"

श्रीमती बरमन ने कहा, "हां, यह मेरा ही बयान है, और यह ी है।"

प्रश्न: "क्या कभी डा० जैन ने आपसे अपनी पत्नी के बारे मे िकायत की थी?"

उत्तर: "यह बात डा० जैन के लड़के और मेरी लड़की की सगाई के म्बन्ध में है। हम सगाई तोड़ना चाहते थे। हमने अपना विचार बदल या था। क्योंकि हम लोग आपस में अच्छे दोस्त थे, अतः हमने इस षय पर बातें कीं। इसी दौरान हो सकता है कि कोई बात हुई हो। सारा विवरण स्मरण नहीं रख सकती कि सगाई तोड़ने से पहले क्या- ा बात हुई थी?"

इस पर श्रीमती बरमन से पुनः पूछा गया कि क्या डा० जैन ने अपनी नी के बारे में कोई शिकायत की थी। उनका उत्तर था, "उन्होंने डा० जैन) की हो, पर मुझे याद नहीं।"

इसके बाद डा० जैन के वकील विपिन बिहारी लाल ने श्रीमती बरमन कई प्रश्न पूछे।

प्रश्न: इस समाज मे आपने कई बार देखा होगा कि एक विवाहित क्ति किसी दूसरे की पत्नी या पति का दोस्त होता है?"

श्रीमती बरमन—"मैं समाज की कोई जज नहीं हूं।"

श्रीमती बरमन के इस जवाब ने अदालत मे हंसी के छींटे बिखेर दिए। द विपिन बिहारी लाल खिसिया कर रह गए।

डा० जैन के वकील के एक अन्य प्रश्न के उत्तर में श्रीमती बरमन ा कहना था, "इसका निर्णय आप ही करें कि मैं दकियानूसी हूं या हीं।" और विपिन बिहारी लाल ज्यादा देर तक श्रीमती बरमन से रह न कर सके।

इसके बाद डा० जैन के वकील विपिन विहारीलाल ने डा० भरतसिंह
जिरह शुरू की।

एक प्रश्न के उत्तर में डा० भरतसिंह ने बताया, मैंने घाव के किसी
ा का एक्स-रे नहीं लिया। मेरे विचार में बाएं बाजू की हड्डी
का घाव मरणोत्तर था। क्योंकि उस जगह या उसके पास कहीं
रक्त-तंतु नहीं उभरे थे। यह इसलिए हुआ कि बहुत सारे घावों के
ण शरीर से काफी रक्त-स्राव हो चुका था।"

विपिन विहारीलाल: "कोई भी व्यक्ति इस सम्भावना को नजर-
ज नहीं कर सकता कि बिना रक्त-तंतु के मृत्यु से पूर्व हड्डी टूटी
।"

डा० भरतसिंह: "मरणपूर्व की हड्डी टूटने से रक्त-तंतु उभरने की
ही संभावना रहती है। मगर हड्डी टूटने से पहले यदि शरीर से
-स्राव होता है तो रक्त-तंतु उभरने की सम्भावना नहीं रहती। मुझे
ी ने नहीं बताया कि रक्त-स्राव करने वाले घाव हड्डी टूटने से पहले
या बाद के।"

विपिन विहारीलाल के बाद चन्द्रेश शर्मा के वकील हसराज भार-
के एक प्रश्न के उत्तर में डा० भरतसिंह ने बताया कि यह कोई जरूरी
है कि यदि कोई चाकू गरम कपड़े को भेदता हुआ जिस्म में घुसे और
ाहर निकाला जाए तो उसके साथ गरम कपड़े के कुछ रेशे भी
ह जायें।

इसके बाद मुफ्फरनगर के ज्योतिषी आनन्दमणि की गवाही हुई।
थोड़ी देर बाद ही सरकारी वकील को लगा कि आनन्दमणि पुलिस
ामने दिए गए अपने पहले के बयान से हट रहा है तो उन्होंने उसे भी
ायल' घोषित करने की प्रार्थना की।

आनन्दमणि अपने द्वारा बनाई गई दोनों जन्म कुंडलियों का
देर तक निरीक्षण करने के बाद सेशन जज श्री सिद्दू ने कहा,
मैं इतनी देर तक इन जन्मकुंडलियों में फंसा रहा तो मैं पागल
ाऊंगा।"

दुर्गादत्त ने कहा कि उपर्युक्त घटना २२ दिसम्बर, १९७३ से पूर्व
ा एक वर्ष तक चन्द्रेश शर्मा अम्बाला में रहती आ रही है।

चन्द्रेश के वकील भारद्वाज के एक प्रश्न के उत्तर में दुर्गादत्त ने कहा
और ४ दिसम्बर से पूर्व उसने अम्बाला में चन्द्रेश को देखा था।

चांदनी चौक निवासिनी श्रीमती शकुन्तला देवी ने अदालत को
ा कि चन्द्रेश शर्मा एक वक्त उसके पति हरिसिंह के दफ्तर—'मेसर्स
ी एंड एसोसियेट्स'—में सर्विस करती थी। अम्बाला जाने से
वह एक फोटो एलबम व कुछ अन्य कागजात उसके पास छोड़ गई
११ दिसम्बर, १९७३ को पुलिस उसके निवासस्थान पर आई
फोटो, एलबम आदि अपने कब्जे में ले गई। इस पर अदालत में
लबम पेश किया गया जिसमें डा० जैन व चन्द्रेश के चार रंगीन
थे।

चन्द्रेश के वकील भारद्वाज के पूछने पर शकुन्तला देवी ने बताया कि
ने मुझे बताया था कि वह अम्बाला जा रही है, वह फोटो एलबम
यहीं छोड़े जा रही है जो अम्बाला से वापिस आने पर वह ले लेगी।
चन्द्रेश फिर अम्बाला से नहीं लौटी। और जब वह लौटी तो उसके
पुलिस थी।

सके बाद शकुन्तला देवी के पति हरिसिंह ने अपनी गवाही में
कि चन्द्रेश उसी के दफ्तर में काम करती थी और अम्बाला
पहले उसने नौकरी छोड़ दी थी। एक बार हमारी लड़की
खों में कोई तकलीफ थी तो चन्द्रेश ने मुझे डा० जैन के पास
ी सलाह दी थी। चन्द्रेश ने मुझे बताया था कि कैलाश कॉलोनी
का मकान है और पहली मंजिल पर रहने वाले फ्लैट-मालिक से
झगड़ा चल रहा है।

× × ×

टेट ट्रांसपोर्ट अथारिटी के क्लर्क मदनलाल ने बताया कि डी०
बी० ४८४७ नामक कार विद्या जैन के नाम रजिस्टर्ड थी। इसी
विद्या जैन को लेकर डा० जैन नर्सिंग होम गए थे। दूसरी

कार डॉ० एल० जे० ११ डा० जैन के नाम पर थी जो
दिसम्बर, १९७३ को बेच दी थी।

× × ×

सेन नर्सिंग होम के डा० सेन ने अदालत को बताया कि
वस्तुतः एक जिन्दादिल पति-पत्नी थे। मुझे सदैव यही
वे दोनों प्रसन्न पति-पत्नी हैं।

डा० सेन ने आगे कहा कि जब मैं इर्विन अस्पताल
ण्टेण्डेण्ट था तो मैंने अस्पताल में डा० जैन को 'रजिस्ट्रार
मेलोजी' के पद पर नियुक्त किया था। इस तरह मैं
काफी अरसे से जानता हूं।

× × ×

जामा मस्जिद के सैयद मोहिउद्दीन, जो कि तितिम्मा
थे गवाह के रूप में पेश हुए तो जज श्री सिद्दू ने
"मेरे ख्याल से अभियोग पक्ष विभिन्न धर्मों के गवाह पेश
चाहता है कि हमारा देश धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है।"

सैयद साहब ने अदालत को बताया कि किस तरह
बार उनके पास गई थी। उसने पूछा था कि जिससे वह
है, क्या उससे उसकी शादी हो जाएगी?

× × ×

रामाकृष्णा पुरम, नई दिल्ली के ज्योतिषी भगवानदास
गवाही में स्वीकार किया कि २८ नवम्बर, १९७३ को
बजे के लगभग चन्द्रेश व राकेश कौशिक उसके पास
जानना चाहती थी कि क्या उस व्यक्ति से उसका
वह प्रेम करती है। उसने उस व्यक्ति का नाम "एन"
बताया था।

एक प्रश्न के उत्तर में भगवानदास ने बताया कि
हत्या के तीन चार दिन बाद उसे उसकी पत्नी ने यह
था। वह स्वयं समाचारपत्र नहीं पढ़ता है।

× × ×

डा० जैन चन्द्रेश के साथ अपनी श्रीनगर यात्रा के दौरान डल झी
रसेस मारग्रेट' नामक शिकारा में ठहरे थे। शिकारा के मालिक गुल
मद ने अदालत में साहिब (डा० जैन) व मेम साहिब (चन्द्रेश शम
शिनाख्त करते हुए कहा कि दोनों १९६७ में उसके शिकारे पर १
। रोज के किराए पर ठहरे थे। उन दिनों शिकारे पर अन्य क
भी न था। डा० जैन ने जाते समय उसे एक प्रमाणपत्र भी प्र
। था।

जब गुलाम मुहम्मद 'साहिब' और 'मेम साहिब' की ओर उं
कर शिनाख्त कर रहा था तो उस वक्त डा० जैन कुछ समय
हीं रहे, सिर्फ कसमसा कर रह गए। मगर चन्द्रेश बुरी
ा गई और उसने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढंक लिया।
गुलाम मुहम्मद ने उन चित्रों को भी शिनाख्त की जिनमें चन्द्रेश
जैन ... थे।

× × ×

गुलाम मुहम्मद की गवाही के बाद अभियुक्त भागीरथ ने
बय से शिकायत की कि एक 'अंडर ट्रायल' ने उसे पीटा है। ज
इंसपेक्टर को बुलाया तो उसने इस घटना की पुष्टि की। इस
भी सिद्धू ने चेतावनी दी कि भविष्य में इस तरह की घटना
ी चाहिए।

× × ×

टैक्सी ड्राइवर अमरीकसिंह ने अपनी गवाही में कहा कि ४ दिसम
७३ को रात को वह दो व्यक्तियों को बदरपुर ले गया था।
ड़ कपड़े पहने हुए थे। उनका रंग काला था। उसने उनसे सिर्फ
किराए के वसूल किए थे।
बाद में अमरीकसिंह ने उन दोनों व्यक्तियों को पहचान कि

कुछ दिनों बाद कौशिक ने मुझे बताया कि उसने करनसिंह को पूरा करने के लिए १२०० रुपए दिए हैं। और वह काम करने के तैयार हो गया है।

मगर करनसिंह टालमटोल करता रहा तो कौशिक ने मुझसे कहा करनसिंह से कहूं कि वह काम पूरा कर दें।

एक शाम मैं कौशिक के साथ हौज-काजी गया। राकेश स्कूटर से कर एक गली में घुस गया। थोड़ी देर बाद वह चन्द्रेश शर्मा के साथ । फिर हम तीनों पास के एक रेस्तरां में चले गए।

रेस्तरां में चन्द्रेश ने मुझसे कहा कि मैं करनसिंह से काम करने को साथ ही चन्द्रेश ने यह भी कहा कि कौशिक को ट्रकों के व्यापार में हो रहा है, जिसके कारण उसका स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। मैं तक तो सुनता रहा, फिर यह कहकर चला आया कि मुझे देर है।

कुछ दिनों बाद राकेश कौशिक ने मुझे बताया कि उसने करनसिंह हजार रुपया दे दिया है। फिर कुछ दिनों पश्चात् कौशिक ने की कि न तो करनसिंह काम ही कर रहा है और न ही पैसे रहा है।

तीन दिनों के बाद मैं कौशिक के साथ मार्क रेस्टोरेन्ट में गया। पहले से ही चन्द्रेश बैठी इन्तजार कर रही थी। कनॉट प्लेस से टैक्सी गई और हम तीनों करनसिंह से मिलने चल दिए। मगर करनसिंह । वापसी में चन्द्रेश अपनी पारिवारिक समस्या के बारे में से बातें करती रही। उसने यह भी कहा था कि 'जीवन में चैन मिलेगा, क्योंकि करनसिंह काम नहीं करेगा।'

चांदनी चौक में जब टैक्सी उतरी तो मैं कौशिक को जरा परे ले र मैंने उससे पूछा कि 'आखिर यह माजरा क्या है?' इसपर ने कहा—"एक मशहूर नेत्र-चिकित्सक है जो चन्द्रेश से विवाह चाहता है। डाक्टर खुद अपनी पत्नी से परेशान है क्योंकि घर को बरबाद कर रही है। कौशिक ने उस डाक्टर का

रहे कि चौधरी डा० जैन का ड्राइवर था और इस नीली कार का
था डी० एल० जे० ११।

चलने से पहले कौशिक ने ड्राइवर से पूछा था कि क्या यह कार डा०
एस० ने दे भेजी है ? ड्राइवर के 'हां' कहने पर हम लोग उसमें
हो गए। रास्ते में दो तीन जगहों पर कार बिगड़ी। अतः उसे
में ही छोड़ दिया गया। गांव में सयाना नहीं मिला। अतः हमने
वापिस लौटने का फैसला किया। हम लोग एक बस द्वारा दिल्ली
हुए। रास्ते में कौशिक व चौधरी तो उतर गए और मैं अकेला
दिल्ली आ गया।"

"क्या वस्तुतः कौशिक की पत्नी का देहान्त हो गया था ?"

पुलिस इंसपेक्टर खेरातीराम ने अदालत को बताया, "मैं चरखी-
के रामपुरा गांव में गया। वहां जाकर मैंने देखा कि कौशिक की
जिन्दा है। मैं कौशिक की पत्नी रामरती के अलावा कौशिक की
व 'अंकल' से भी मिला।"

× × ×

११ दिसम्बर, १९७३ को करतार सिंह व उजागर सिंह गिरफ्तार
थे। उन्हें दिल्ली लाया गया। दिल्ली प्रशासन की डिसपेंसरी के
र अरुण सागर ने १२ दिसम्बर को उनका निरीक्षण किया।

डा० सागर के अनुसार उजागर के दाएं घुटने पर खरोंच थी।
ही घुटने के जोड़ पर भी कुछ मामूली खरोंचें थीं। यद्यपि उजागर
एं घुटने और ठोड़ी पर भी दर्द की शिकायत की, मगर इन जगहों
कोई रगड़ या सूजन नहीं थी। सभी चोटें साधारण थीं, और किसी
वस्तु से उत्पन्न हो सकती थीं। ये चोटें लगभग ८ दिन पुरानी थीं।

उसी रात को करतार सिंह का भी परीक्षण किया गया। उसके
बाजू पर दो खरोंचें थीं और बाएं कंधे पर दो रगड़ के निशान थे।
पर की तरह करतार की भी चोटें मामूली थीं और लगभग ८ दिन
नी थीं।

× × ×

ापूर्ण स्थिति टल जाए।

अन्ततः सेशन जज श्री सिद्धू ने स्थिति संभाल ली। उन्होंने कहा मुकदमे के रिकार्ड में वकील के प्रश्न व उनके अनुमति न प्रदान ा का निर्णय दर्ज किया जाएगा।

उपर्युक्त निर्णय के बाद ही बचाव के वकील शान्त हुए और अदालत कार्रवाई आगे बढ़ सकी।

× × ×

क्राइम ब्रांच के सब इंसपेक्टर रमाकान्त की गवाही हुई तो कई तथ्य सामने आए।

विद्या जैन हत्याकांड के सिलसिले में रमाकान्त लखनऊ गया था। ऊ जाने का मकसद यह था कि वहां विद्या जैन के पिता मेजर टी० जैन रहते हैं।

मगर रमाकान्त ने डा० जैन के वकील के इस आशय से इन्कार किया सने वहां मेजर जैन को डा० जैन के विरुद्ध गवाही देने के लिए ा की कोशिश की।

रमाकान्त ने कहा कि यह भी गलत है कि जब मेजर जैन डा० जैन विरुद्ध जाने को तैयार न हुए तो उसने उन्हें धमकी दी, जिसपर मेजर ने उसे घर से बाहर निकाल दिया।

अपनी तफतीश का ब्योरा देते हुए रमाकान्त ने अदालत को बताया मैंने डा० जैन की बहन श्रीमती नीरजा जैन के भी बयान लेने की शिश की। श्रीमती नीरजा जैन डिफेन्स कॉलोनी में ही रहती हैं। मैंने ो विद्या जैन की दोनों बहनों—श्रीमती माया जैन व श्रीमती दया —से भी सम्पर्क किया। उन्होंने जो कुछ कहा वह मैंने केस डायरी में दर्ज ा है। मगर औपचारिक रूप से उनके बयान लेने की मैंने कोई जरूरत समझी। मैंने श्रीमती माया जैन के घर की तलाशी नहीं ली।"

अभियुक्तों के गवाह

बचाव पक्ष भी चुप नहीं बैठा था। उसने भी कुछ गवाहियां जुटा ली

"मैंने प्रेम गुप्ता व नैयर के विद्या जैन के साथ सम्बन्धों की जान-कारी हासिल करने के लिए बहुत सारे लोगों से पूछताछ की थी। मगर दोनों के घरों की तलाशी नहीं ली। और न ही नैयर अथवा गुप्ता चीजों के लिए विद्या जैन के घर को तलाशी ली गई।

सर्वथा निर्दोष होने का डा० जैन का दावा

सुबह कोर्ट में आते हुए डा० जैन काफी नर्वस लग रहे थे। काफी से थे वे। कुछ खोए-खोए से डा० जैन अपनी सीट पर आकर बैठ पुकार होने पर वह हड़बड़ा कर उठ खड़े हुए। उनका चेहरा तमा आया था। उन्होंने एक बार चन्द्रेश की तरफ कनखियों से और कुछ सोचते हुए से 'बाक्स' में आ खड़े हुए।

सारी अदालत की नजरें डा० जैन पर टिकी हुई थीं। कोर्ट का वातावरण काफी गरमा गया था। सेशन जज श्री तिवृष् के प्रश्नों का देते समय डा० जैन या तो जज साहिब की ओर देखते, या फिर की छत पर टिक जातीं।

कोर्ट—"अभियोग पक्ष के गवाहान, शकुन्तला देवी, कर्मसिंह, माया और फकीरचन्द के अनुसार तुम्हारे और चन्द्रेश शर्मा के संयुक्त का एलबम पुलिस ने शकुन्तला देवी के घर से बरामद किया, जिसको चन्द्रेश शर्मा ने पुलिस को दी थी। तुम्हें इस बारे में क्या कहना ?"

डा० जैन—"मुझे पता नहीं कि एलबम कब, कैसे और किसके से बरामद किया गया। लेकिन यह सही है कि एलबम में मेरे चन्द्रेश के संयुक्त चित्र हैं।"

कोर्ट—"सरकारी गवाह गुलाम मुहम्मद ने कहा है कि १९६७ में और चन्द्रेश शर्मा दल सीस में 'प्रितेश मारपेट' नामक शिकारे में ठहरे थे। और ये चित्र वहीं तब लिए गए थे। तुम्हें इस कहना है ?"

डा० जैन—"यह सही है।"

कोर्ट—"अपनी कश्मीर यात्रा के ...
को एक प्रमाणपत्र भी दिया था ?"

डा० जैन—"यह सही है।"

"क्या तुमने चन्द्रेश शर्मा को वाई० डब्ल्यू० सी० ...
दिलाने के लिए श्रीमती शीला खन्ना से चन्द्रेश को एक
दिलवाया था ?"

डा० जैन—"हाँ।"

कोर्ट—"सरकारी गवाह श्रीमती जनक बरमन के अनुसार
गुप्ता व विद्या जैन में अच्छी 'दोस्ती' थी। कश्मीर यात्रा के दौ
मती बरमन ने प्रेम गुप्ता व विद्या जैन को 'युगल द्वय' कहते दे
साथ ही एक बार तुम, तुम्हारा पुत्र व श्रीमती बरमन ...
विवाह में गए थे, जबकि श्रीमती विद्या जैन प्रेम गुप्ता के साथ
सम्मिलित होने के लिए मथुरा गई थीं। इस सब के बारे में
कहना है ?"

डा० जैन—"जहाँ तक श्रीमती जनक बरमन की व्यक्ति
का प्रश्न है, मुझे कुछ नहीं कहना। कश्मीर यात्रा के दौरान
मित्र साथ थे। हमारे पास तीन-चार कारें थीं। हम लोग ...
अदला-बदली करते रहते थे। यदि कुछ अवसरों पर विद्या जैन
गुप्ता के साथ गयीं तो बदले में श्रीमती गुप्ता मेरे साथ रहीं।
कई अन्य अवसरों पर श्रीमती विद्या जैन श्री बरमन ...
जबकि श्रीमती बरमन मेरे साथ बैठीं। कई बार हम लोग ...
भी गए।"

जयपुर के विवाह का जिक्र करते हुए डा० जैन ने कहा—"...
की बहन के लड़के का विवाह (मथुरा से) जयपुर के एक मेरे
और प्रिय मित्र की लड़की से हो रहा था। यह विवाह मैंने ही तय
था। अतः मैं कन्यापक्ष की ओर से विवाह में शामिल हुआ। ...
मुझे ही करना था, क्योंकि विवाह से कुछ दिन पूर्व लड़की के ...
देहान्त हो गया था। इसी अवसर पर श्रीमती जनक बरमन ने

गईं। उधर विद्या जैन को मथुरा में अपनी बहन के घर में कुछ रस्मों को पूरा करना था। दिल्ली से हमारे कई मित्र मथुरा में हमें सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रित किए गए थे। श्री प्रेम गुप्ता मथुरा गए थे।"

कोर्ट—"मुखबिर रामजीलाल ने अपनी गवाही मे कहा है कि ४ म्बर, १९७३ को शाम ४-३० बजे के लगभग तुम चांदनी चौक के म रेस्टोरेन्ट में गए जहां तुमने उजागर सिंह से काम सावधानी से को कहा और उससे वायदा किया कि जो वह चाहेगा, मिलेगा। ही तुमने उसे आश्वस्त किया कि तुम 'केस की देखभाल' करोगे। सम्बन्ध में तुम्हें क्या कहना है?"

"४ दिसम्बर, १९७३ को दोपहर बाद तो मैं अपने आफिस से बाहर ला ही नहीं। और आज तक मैंने अपने कदम म्यूविंग रेस्टोरेन्ट में रखे हैं।"

कोर्ट—"रामजीलाल ने आगे कहा है कि ४ दिसम्बर की शाम को अपनी कार में चन्द्रेश शर्मा के साथ अपनी कोठी गए। तुम तो दाखिल हो गए, जबकि चन्द्रेश पास ही खड़ी टैक्सी डी० एल० वाई० की तरफ चली गई?"

डा० जैन—"यह गलत है। उस शाम न तो चन्द्रेश मुझसे मिली और ही उसने कार में मेरे साथ सफर किया। हां, उस शाम क्लीनिक से साथ कार में रामसिंह, उसका भांजा व किरनबाई थे। ड्राइवर चौसिंह चौधरी कार को सीधे घर तक ड्राइव करता हुआ आया है।"

कोर्ट—"रामजीलाल के अनुसार उसने तुम्हें कोठी से बाहर देखा और तुम्हारी पत्नी विद्या जैन तुम्हारे पीछे-पीछे आ रही तुम्हें इस विषय में क्या कहना है?"

डा० जैन—"रामजीलाल ने हमें देखा या नहीं, इस बारे में मुझे नहीं पता। अलबत्ता मैं और मेरी पत्नी कोठी से बाहर निकले थे।"

उस दिन अदालत के उठने का समय हो गया। अब डा० जैन संबंधी

एफ० आई० आर० का जिक्र करते हुए डा० जैन ने कहा कि उस में काफी दुखी और घबराया हुआ था। मैंने सारे तथ्य रिपोर्ट में दिए थे।

जब डा० जैन से यह पूछा गया कि वह अपनी पत्नी को पास के सफ-दरजंग अथवा मूलचन्द अस्पताल में ले जाने की बजाय सेन नर्सिंग होम ले गए? तो उन्होंने उत्तर दिया कि मुझे सरकारी अस्पतालों पर विश्वास है। दूसरी तरफ सेन नर्सिंग होम एक बढ़िया व पूर्णतया उपकरण-सज्जित अस्पताल है।

पोस्टमार्टम करने वाले डा० भरतसिंह की राय से असहमत होते हुए डा० जैन ने कहा, "विद्या जैन की मृत्यु घटनास्थल पर तत्काल नहीं हो गई थी। मुझे २५ साल का डाक्टरी अनुभव है और मैं यह जानता हूं कि कौन व्यक्ति जीवित है और कौन मृत। घटनास्थल पर उपस्थित न होने वाला कोई भी डाक्टर इस सम्बन्ध में निश्चित राय जाहिर कर सकता। वह तत्काल नहीं मरी। वह कराह रही थी। उसकी नब्ज मन्द थी। और इसीलिए मैं उसे तत्काल अस्पताल ले गया। कथित बाजू की हड्डी टूटने का मरणोत्तर घाव निश्चित रूप से मरणोपरान्त है।"

अभियोग पक्ष द्वारा अपने विरुद्ध लगाए गए विद्या जैन हत्याकांड-षड्यन्त्र के आरोपों को 'सर्वथा निराधार' बताते हुए डा० जैन ने उन्हें कल्पना या कुचक्र के एक शानदार उदाहरण की संज्ञा दी।

डा० जैन ने बड़े आत्मविश्वास से अदालत में कहा, "मैं सर्वथा निर्दोष हूं।"

मैं किसी भी अभियुक्त को नहीं जानती—चन्द्रेश शर्मा

चन्द्रेश शर्मा जब 'विटनेस बाक्स' में अपना बयान देने खड़ी हुई तो काफी गम्भीर थी। और दिनों की अपेक्षा आज उसका मेकअप भी कम था। बाल करीने से बंधे हुए थे। उसका चेहरा बता रहा था कि उसके मन में बहुत बड़ा अन्तर्द्वन्द्व चल रहा है। वह सशंक जरूर थी, मगर

कहा कि रामजीलाल सभी अभियुक्तों के विरुद्ध बयान देने को राजी हो गया है, इसका मतलब यह है कि तुम सब लोगों को फांसी पर चढ़ना होगा।"

यह कहते-कहते चन्द्रेश बुरी तरह फूट-फूट कर रो पड़ी। उसकी सिसकियां रुकने ही न आ रही थीं। सारी अदालत स्तब्ध, सब लोग खामोश। अधिकांश दर्शक उसकी तरफ देख रहे थे।

चन्द्रेश को रोती देख कौशिक कुछ गम्भीर हो गया था। मगर डा० जैन चुपचाप आकाश ताक रहे थे। मुंह में पान भी चल रहा था।

कुछ देर बाद चन्द्रेश ने अपने को संभाल लिया और धीरे स्वर में अदालत को बताया कि एक बार फिर श्री पटेल एवं श्री सुली उसके पास आए थे और इसी तरह की धमकियां दी थीं।

"समय-समय पर डा० जैन द्वारा दिए ड्राफ्टों के बारे में तुम्हें क्या कहना है?"

"यह सही है कि मैंने ८४०० रुपए डा० जैन से लिए थे। मगर दो दिन बाद मैंने यह पैसे डा० जैन को लौटा दिए थे। यह भी सही है कि डा० जैन द्वारा भेजे गए ड्राफ्ट मेरे अम्बाला के बैंक में जमा होते रहे थे।" चन्द्रेश ने उत्तर दिया।

"अभियोग पक्ष के अनुसार डा० जैन ने १४ सितम्बर, १९७३ को १००-१०० रुपए के नोटों में बैंक से १० हजार रुपए निकलवाए थे और यह रुपए तुम्हें दे दिए गए, जिन्हें बाद में तुमने करनसिंह को विद्या जैन की हत्या करने के लिए दिए?" "यह बिल्कुल गलत है।" चन्द्रेश का उत्तर था।

श्री सिद्धू—"क्या तुम डा० जैन के साथ डल झील में 'प्रिंसेस मारग्रेट' नामक शिकारे पर ठहरी थी?" चन्द्रेश का चेहरा शर्म के मारे सुर्ख हो गया। उसने अपना चेहरा हाथ से ढांपते हुए कहा, "यह सही है।"

अन्य प्रश्नों के उत्तर में चन्द्रेश ने बड़े आत्म-विश्वास से बताया, "४ दिसम्बर, १९७३ को मैं अपने घर से निकली थी क्योंकि मेरा पुत्र काफी बीमार

उसने इन बातों से भी इन्कार किया कि हत्या के समय वह स्थल पर मौजूद थी और वह रामाकृष्णापुरम के ज्योतिषी राम के पास जन्तर-मन्तर लेने के लिए गई थी।

जब अदालत द्वारा यह पूछा गया "क्या तुम ४ दिसम्बर को न्यूथिग रेस्टोरेन्ट में गई थी ?" चन्द्रेश ने उत्तर दिया, "यह गलत है। मैंने पहली बार रेस्तरां तब देखा जब पुलिस जांच के मुझे वहां ले गई थी।"

चन्द्रेश ने रामजीलाल के बयान से इन्कार करते हुए कहा, "रामजीलाल ने कहा है यह सब गलत है। मैंने रामजी का नाम पी० अशोक पटेल की पूछताछ के दौरान पहली बार सुना।"

चन्द्रेश ने इस बात से भी इन्कार किया कि वह रामजी की में कौशिक के साथ घूमती-फिरी थी।

विद्या जैन की हत्या के षड्यन्त्र के सभी आरोपों से इन्कार हुए चन्द्रेश ने कहा, "मैं किसी भी अभियुक्त को नहीं जानती। मैंने पहली बार जेल में देखा।"

बयान कौशिक का

"यह तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है कि हर प्रश्न का उत्तर देते तुम कह दो—"मुझे नहीं पता। तुम जवाब 'हां' या 'ना' में दो। कुछ ऐसे प्रश्न भी हो सकते हैं जिनका उत्तर तुम यह कह कर दे सकते कि मुझे नहीं पता।" ये शब्द थे सेशन जज श्री के० एस० सिद्धू के उन्होंने कौशिक को सम्बोधित करते हुए कहे।

अदालत में कौशिक का प्रश्नोत्तर रूप में बयान चल रहा और हर प्रश्न के उत्तर में कौशिक कह देता—"मुझे नहीं पता। संभवतः इसी बात पर चिढ़ कर सेशन जज महोदय ने कौशिक को उपर्युक्त शब्द कहे। इसके बाद कौशिक ने दूसरा ढंग अपना लिया। वह लगभग हर प्रश्न का यह उत्तर देने लगा—"यह गलत है।" कौशिक से लगभग ६० से ज्यादा प्रश्न पूछे गए और उसने लगभग हर बार तीन शब्दों

इन्कार किया। उसने कहा, "मैंने पुलिस को नहीं बताया चाकू अमुक स्थान पर फेंका है।" उजागर सिंह के अनुसार फ्तारी के समय पुलिस ने उसके कपड़े बरामद कर लिए थे अदालत में अभियोग पक्ष द्वारा पेश नहीं किए गए।

इसपर अदालत ने पूछा कि चाकू और उजागर सिंह के खून के दाग पाए गए थे जो कि विद्या जैन के रक्त-ग्रुप के सम्बन्ध में अभियुक्त का क्या कहना है? उजागर सिंह "मेरी गिरफ्तारी के वक्त पुलिस कुछ बोतलों में खून लाई उसने कुछ कपड़ों व अन्य चीजों पर डाल दिया।" गिरफ्त उजागर के जिस्म पर कुछ चोटें पाई गई थीं। इनका स्पष्ट हुए उसने कहा, "मैं एक किसान हूं। अतः इस तरह की आम बात है।" उजागर ने अपने को निर्दोष बताते हुए क दुश्मन मक्खनसिंह के कहने पर मुझे फंसाया गया है।"

करतार सिंह ने भी विद्या जैन की हत्या के षड्यन्त्र से अप नता प्रकट की। उसने कहा कि वह अपने भाई उजागर के किसी अन्य अभियुक्त को नहीं जानता। उसने सभी आरोपों किया।

भागीरथ ने अदालत को बताया कि यह झूठ है कि वह राके आदि को उजागर सिंह-करतार सिंह आदि से मिलाने सैलोन ग था। उसने अपने ऊपर लगाए गए सभी आरोपों से इन्कार

इन्हीं दिनों, एक दिन सेशन जज महोदय ने घटनास्थल का क्षण किया। उन्हें वह नाला, कोठी का पोर्च, डा० जैन की क करने की जगह व ओम प्रकाश की टैक्सी खड़ी होने का स्थान अ स्थल दिखाए गए। सेशन जज के साथ अभियोग व बचाव पक्ष थे।

निर्मम-सुनियोजित हत्या

दिन था ७ मई। आज से वकीलों के समापक तर्क शुरू होने

(रिपन्टिट) सैकेन्ड का समय इन १४ वारों के ल
कैसे सम्भव है।

श्री अरोड़ा ने कहा, "यह रात इतनी काली न
जैन ने बताया है। पूर्णमासी को गुजरे सिर्फ ५ दिन हुए
यदि मान भी लिया जाय कि रात काली थी तो डा०
बता दिया कि ये हत्यारे सफेद धोती व कमीजें पहने हुए
व ऊंचाई का अनुमान डा० जैन ने कैसे लगा लिया? ड
जैन हत्यारों की हुलिया बयान कर सकते हैं मगर ४ फुट
उनकी पत्नी के साथ क्या हुआ, इसका उन्हें कोई अन
डा० जैन व विद्या जैन के बीच सिर्फ एक फियट कार थी।
४ फुट, लम्बाई ६ फुट व मोटाई ४·५ फुट थी। उधर ड
५·९ फुट था तथा विद्या जैन का कद ५·६ फुट था। इस
की दूसरी तरफ क्या हो रहा है, देख सकते थे। मगर उन्हें
देखने को अनदेखा किया।

श्री अरोड़ा ने अपने तर्क आगे बढ़ाते हुए कहा, "डा
जैन का व्यवहार अत्यंत असामान्य था। उन्होंने अपन
पड़ोसी श्रीमती शीला सभ्भर के घर के सामने पार्क की, ज
तौर पर अपनी कार अपनी ही कोठी के सामने खड़ी करते थ
भी व्यक्ति सर्दियों की रातों में अपनी पत्नी को कार तक
लिए पैदल चलवाएगा? दूसरी तरफ श्रीमती शीला सभ्भ
घर में नहीं थी। निचली मंजिल भी खाली पड़ी थी। अत
में पूरा अन्धेरा था। और यह अन्धेरा डा० जैन के लिए
था। अतः डा० जैन ने मौके का लाभ उठाया और अपनी
खड़ी की, ताकि हत्यारों को अपना काम करने का पूरा अव

श्री अरोड़ा ने तर्क देते हुए पूछा, "डा० जैन अपनी आह
पास के मूलचन्द अथवा सफदरजंग अस्पतालों की बजाय इतन
नर्सिंग होम क्यों ले गए? क्या इसलिए कि डा० जैन
मित्र हैं?

ही आ रहे थे। १०—०५ तक अदालत का कमरा भर
था। पत्रकार थे, वकील थे और पुलिस अधिकारी थे
भी तिकड़म से अन्दर पहुंच ही गए थे। सब लोगों
गुत्थियां सुलझाने में लगा हुआ था। लोग बैठने के
की अटकलें लगा रहे थे।

लगभग १०—१० पर डा० जैन बड़बड़ाते हुए से
चेहरे पर पसीना और आंखों में एक अजीब-सी शून्यता।
व्यक्तित्व पर हवाईयां उड़ रही थीं। सफेद मुलाई,
रंग की पैंट और आंखों पर वही पुराना चश्मा।
छड़ी को नहीं लाए थे। नीले रंग के रूमाल से चेहरे
हुए डा० जैन अपने बहनोई जनरल वीरेन्द्रसिंह के साथ
धंस से गए। साथ में उनका लड़का भी बैठा था। मगर शिर
बात नहीं हुई।

अचानक कोर्ट रूम में एक हलचल-सी हुई। चन्द्रेश आ
थी। पीला ब्लाउज, हरी प्रिंटेड वूली की
हुए बाल। चन्द्रेश आज जरूरत से ज्यादा खामोश
संयत थी। उसकी घबराहट पर उसकी गम्भीरता
था। सधी हुई चाल से वह कोने की एक बेंच पर जाकर बैठ
अपना थैला खोला, पान निकाला, मुंह में डाला और
के सहारे टिका दिया।

अगले ही क्षण राकेश कौशिक, भागीरथ, करतार
कल्याण गुप्ता एक के बाद एक अदालत में आए और अपनी-अ
पर बैठते गए। कौशिक कुछ नर्वस लग रहा था। करतार
ने अपने कन्धों पर अंगोछे टांग रखे थे। दोनों सामान्य थे।
कुछ घबराया-सा लग रहा था। कल्याण के चेहरे
नहीं होती थी।

लोगों की आंखें बार-बार घड़ी की तरफ उठ रही थीं:

श्री सिद्धू के अनुसार, "रामफल का बयान स्पष्ट रूप से कौशि चन्द्रेश को षड्यन्त्र का भागीदार बनाता है। अतः मेरे लिए उसके र र विश्वास न करने का कोई कारण नहीं है।"

श्री सिद्धू ने करतारसिंह के बयान को भी स्वीकार कर लिया कौशिक व चन्द्रेश ने उसे १४ सितम्बर, १९७३ को १० हजार विद्या जैन की हत्या करने को दिए थे। "मैं सन्तुष्ट हूँ कि राम करतारसिंह व फूलदास ने कुल मिलाकर सचाई ही बयान की है।" सेशन जज महोदय ने कहा।

डॉ० जैन ने १४ सितम्बर, १९७३ को बैंक से छुट १००–१०० नोटों में १० हजार रुपए निकलवाये थे। श्री सिद्धू के अनुसार जैन ने १० हजार रुपए बैंक से निकालकर चन्द्रेश को दिए, और चन्द्रेश ने रुपए करतारसिंह को दे दिए।

सेशन जज ने यह भी स्वीकार किया कि राकेश कौशिक सितम्बर, १९७३ को डा० जैन की कार (DLJ 11) में जगदीश प्रसाद के साथ मथुरा की ओर गया था। कार का ड्राइवर था—रघुराजसिंह, जो कि डा० जैन का कार ड्राइवर था?

चरखी-दादरी के मिस्त्री रामकिशन के बारे में जज महोदय विचार था कि वह एक डरपोक किस्म का आदमी है और किसी लाल वशीभूत हो वह कौशिक व रामजीलाल के षड्यन्त्र में शामिल हो गया। मगर जब वह अपने मिशन में असफल हो गया तो उसे आप कर दिया गया। अतः वह विश्वसनीय गवाह नहीं है।

श्री सिद्धू के अनुसार, ३० नवम्बर, १९७३ तक विद्या जैन हत्या षड्यन्त्र में जैन, कौशिक व चन्द्रेश एक संयुक्त प्रयोजन से शामिल थे। विद्या जैन हत्याकाण्ड के षड्यन्त्र का दूसरा भाग वह था जब इसमें कल्याण गुप्ता, भागीरथ, करतार व उजागर शामिल हुए।"

श्री सिद्धू के अनुसार, "मुखबिर रामजीलाल एक विश्वसनीय गवाह है और उसका बयान कल्याण गुप्ता, भागीरथ, करतार व उजागर

न, कौशिक व चन्द्रेश के साथ षड्यन्त्र में लपेट लेता है। सेशन ज
य ने कहा कि मैं पूरी तरह सन्तुष्ट हूँ कि १ दिसम्बर, १९७३ क
ण-गुप्ता और भागीरथ इस षडयन्त्र में शामिल हो गए थे। औ
ही कौशिक का परिचय करतार व उजागर से कराया था। इ
२ से ४ दिसम्बर तक ये पाचों षडयन्त्रकारी—कल्याण गुप्ता, भागी
करतार, उजागर, व कौशिक एक साथ रहे।

पूथिग रेस्टोरेन्ट की मीटिंग का जिक्र करते हुए सेशन जज
—"४ दिसम्बर, १९७३ को सातो अभियुक्त शाम को रेस्टोरेन्
के थे। निस्सन्देह, यह प्रमाणित हो गया है कि हत्या के षडयन्
भी अभियुक्त शामिल थे।"

ी सिद्धू की उपर्युक्त घोषणा के साथ ही अदालत में एक अजीब-
जना फैल गई। एक अजीब-सी तपिश घिर आई थी सारे वाता-
में। विद्या जैन की हत्या का जिक्र करते हुए जज महोदय ने कहा,
थ्योरी मानने को तैयार नहीं कि चाकू लगने के साथ ही विद्या
मृत्यु हो गई थी। इस सम्भावना को नजरअन्दाज नहीं किया
ता कि नाले से बाहर निकालने व सेन नर्सिंग होम पहुँचने के समय
न जीवित थी।"

द्या जैन के बाजू की मरणोपरान्त चोट के सम्बन्ध में माननीय
विचार था कि यह आवश्यक नहीं कि चाकू लगने समय यह
ा हो। यह विद्या जैन के जिस्म को नाले से निकालते एवं कार
समय भी लग सकता है। मुखबिर रामजीलाल को एक विश्वसनीय
ताते हुए भी सिद्धू ने कहा, उसके बयान को किसी भी तरह
क नहीं माना जा सकता। उसे लगातार चार दिन तक सात
की जिरह भी हिला न सकी। कल्याण गुप्ता और भागीरथ को
ा नवम्बर १९७२ व जुलाई १९७३ से जानता है। कौशिक
ा परिचय तब हुआ जब वह कौशिक को अक्तूबर, १९७३ को
भिवानी और पिलानी की यात्रा पर डी० एल० आई० ५४४

अदालत में दिए गए बयान में पाई गई असंगतियों का प्रश्न है, उस सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि गिरफ्तारी के समय स्वाभाविक रूप से रामजीलाल की मंशा यही रही होगी कि ज्यादा से ज्यादा षड्यन्त्रकारियों को बचाया जाए। वैसे भी वह उस वक्त मुखबिर नहीं बना था। दूसरी तरफ यह असंगतियां भी कुछ अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं।

सेशन जज ने कहा, "बचाव का यह तर्क कि टैक्सी ड्राइवर ओमप्रकाश षड्यन्त्रकारियों में से एक है, मुझे स्वीकार नहीं। ४ दिसम्बर की शाम को उसने जो कुछ देखा व सुना उसके आधार पर उसने सोचा होगा कि ये लोग चोरी-छिपे किसी गैरकानूनी काम में लगे हैं। मगर इस तरह की जानकारी या सन्देह होना इस बात का प्रमाण नहीं है कि ओमप्रकाश भी इस षड्यन्त्र में मिला हुआ है।

"रामजीलाल व ओमप्रकाश के बयानों के अनुसार ४ दिसम्बर, १९७३ की शाम सवा सात बजे घटनास्थल पर कौशिक, चन्द्रेश शर्मा, जागर व करतार उपस्थित थे। घटनास्थल पर चन्द्रेश का उपस्थित होना रामजीलाल के बयान की पुष्टि करता है कि डा० जैन न्यूयिंग स्टोरेन्ट में गए थे। इससे यह भी कारणोचित निष्कर्ष निकलता है कि नरेश जैन की कार में भी डिफेन्स कॉलोनी पहुंची थी। उधर रामजीलाल ने भी दोनों को कार में से उतरते देखा था। मुखबिर के अनुसार स्टोरेन्ट में चन्द्रेश ने षड्यन्त्रकारियों को आश्वासन दिया था कि वह डाक्टर की कार से डिफेन्स कॉलोनी पहुंच रही है, कोठी से बाहर वह कार उतर जाएगी। जैन घर में अपनी पत्नी को बाहर लाएंगे, और करतार उजागर उसकी हत्या कर दें। चन्द्रेश का इस प्रकार का कथन षड्यन्त्रकारियों का बल बढ़ाने के लिए था। चन्द्रेश ने जब यह कहा कि वह भी डाक्टर की कार से डिफेन्स कॉलोनी पहुंच रही है तो इसका मतलब यह हुआ कि रेस्टोरेन्ट में डा० जैन मौजूद थे।"

बचाव पक्ष ने यह तर्क दिया है कि डा० जैन जैसा प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित व्यक्ति रेस्टोरेन्ट में जाने का खतरा नहीं उठाएगा। सेशन जज की

ट में यह तर्क कोई वजन नहीं रखता। "हमें यह नहीं भूलना
हिए कि जैन इस षडयन्त्र का केन्द्र-बिन्दु है, और उसे लगा होगा कि
द वह खुद जाकर षड्यन्त्रकारियों को आश्वस्त नहीं करता तो हो
कता है कि सारी योजना ही ठप्प हो जाए। एक प्रसिद्ध डाक्टर का
सी रेस्टोरेन्ट में पल भर के लिए जाना कोई असामान्य बात नहीं है।
ल्ली में और भी बड़े लोग रहते हैं। वे भी रेस्तराओं में जाते हैं। कोई
सी की तरफ ध्यान नहीं देता, ऐसी फुरसत किसे है और वैसे भी
टोरेन्ट में जाना कौन-सी अनहोनी बात है?"

श्री सिद्धू ने राम सिंह की गवाही को अस्वीकार करते हुए कहा, "मैं
मानने को तैयार नहीं कि ४ दिसम्बर की शाम को डाक्टर की
र में सन्देश डिफेन्स कॉलोनी तक नहीं गयी थी।"

हत्या के दिन डा० जैन के असामान्य व्यवहार का जिक्र करते हुए
न जज श्री सिद्धू ने कहा, "श्रीमती शीला खन्ना के अनुसार डा० जैन
धारणतया अपनी कार अपनी ही कोठी के आगे खड़ी करते थे। मगर
दिन डा० जैन ने शीला खन्ना के घर के आगे कार क्यों खड़ी की?
मती शीला खन्ना अपनी कोठी डी-२१२ की पहली मंजिल पर रहती
बाहरी गेट में नम्बर प्लेट की बत्ती नहीं जल रही थी। अतः डी-२१२
आगे अंधेरा था। वैसे भी उस शाम शीला खन्ना बाहर गई हुई थीं,
पहली मंजिल पर फिर अंधेरा था। निचली मंजिल में कोई रहता
। वहां भी अंधेरा था। डा० जैन ने अंधेरे में डूबी इस कोठी की
ति का फायदा उठाया। हत्यारों को अंधेरे का 'कवर' देने के लिए
ने अपनी कार नं० डी-२१२ के सामने खड़ी की। उधर हत्यारे
के पास की झाड़ी में छुपे हुए विद्या जैन के घर से बाहर आने
इन्तजार कर रहे थे। पास ही टैक्सी डी० एस० वाई० ५५२ खड़ी
। इस प्रकार सारा काम पूर्व-नियोजित योजना के अनुसार चल रहा
। मेरा विचार है कि यदि यह सब पूर्व-नियोजित न होता तो करतार
वा उजागर इस बात का ख्याल रखते कि डा० जैन बीच में अच्छा

न दें या फिर सहायता के लिए न चिल्लाएं। इससे साफ जाहिर है कि उजागर और करतार षड्यन्त्र में अपना निर्धारित रोल अदा कर रहे थे, इस आश्वासन पर कि डाक्टर मौके पर दखल नहीं देगा या सहायता के लिए नहीं चिल्लाएगा। अभियुक्त जैन ने सड़क पर चुपचाप खड़े होकर अपनी भूमिका अदा की जबकि कार की दूसरी तरफ उसकी पत्नी की हत्या की जा रही थी।"

डा० जैन द्वारा दर्ज कराई गई एफ० आई० आर० का हवाला देते हुए श्री सिद्धू ने कहा, "इस दस्तावेज के लेखक अभियुक्त जैन अब हमें यह विश्वास दिलाना चाह रहे हैं कि जब तक वह कार की दूसरी तरफ नहीं गए, उन्होंने अपनी पत्नी अथवा हत्यारों को नहीं देखा। वह हमें यह भी मानने को कहते हैं कि जब वह कार की बाईं ओर को गए, तब भी उन्होंने कुछ नहीं देखा। उन्हीं के शब्दों में 'मैं आश्चर्य में था कि पलक झपकते क्षण (स्प्लिट सेकेण्ड) में मेरी पत्नी को क्या हुआ? इस प्रकार वह यह कहना चाहते हैं कि कार का दरवाजा खोलने से पहले ही, उन्हें पता लग गया कि कार की बायीं तरफ 'कुछ गड़बड़' है और वह उस पलक झपकते क्षण में कार की दूसरी तरफ चले गए।' यह सारी कथा परी कथा-जैसी लगती है। डा० जैन ने निश्चित ही कार की दाहिनी ओर से बाईं तरफ विद्या जैन को करतार द्वारा दबोचने और उजागर द्वारा एक नहीं १४ घाव करते देखा होगा। यदि वहां उस वक्त इतनी रोशनी थी कि डाक्टर जैन भागते हुए हत्यारों को देख सकते थे तो निस्सन्देह उन्होंने कार की दूसरी तरफ अपनी पत्नी को दबोचे जाते और घाव खाते देखा होगा।

"रामजीलाल के अनुसार करतार ने विद्या जैन को दबोच रखा था और उजागर ने उसपर चाकू से प्रहार किए। दूसरे शब्दों में यों कहा जा सकता है कि इस वारदात के समय विद्या जैन खड़ी थी और वह करतार की गिरफ्त में थी। मेडिकल रिपोर्ट भी इस तथ्य की पुष्टि करती है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट व डा० धरमसिंह के अनुसार विद्या जैन के जिस्म के

१४ घावों में से १२ घाव बाईं ओर थे। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मृतक को पीछे अथवा दाईं तरफ करतार ने पकड़ रखा था जिसके कारण विद्या जैन का दायां बाजू भी करतार की गिरफ्त में था। विद्या जैन के बाएं बाजू पर ४ घाव थे। यह इस कारण कि मरहूम ने बाएं हाथ से हत्यारे के प्रहारों को रोकने की कोशिश की होगी। अतः ये घाव विद्या जैन के नाले में गिर जाने के बाद नहीं लग सकते थे। इसका मतलब यह हुआ कि घाव कार की बाईं ओर खड़े-खड़े ही विद्या जैन को लगे थे। दो अन्य घाव-गर्दन के पीछे व पेट के पीछे दाईं ओर—तभी होंगे जब विद्या जैन नाले में गिर गई होगी।

"...निष्कर्ष यह निकला कि १४ घावों में १२ घाव विद्या जैन नाले में गिर जाने से पहले लगे थे। और इन घावों के लगने में कम कम २ या ३ मिनट का समय लगा होगा, न कि 'पलक झपकते ही'।

श्री सिद्धू के अनुसार इन दो-तीन मिनटों में करतार विद्या जै को पकड़े था और उजागर ने उस पर चाकू से घाव किए थे डा० जैन कार की बाईं तरफ चुपचाप खड़े अपनी पत्नी की हत्या होते देखते रहे। वह कार की बाईं तरफ तभी गए जब विद्या जैन नाले में गिर गई और हत्यारे भाग गए। डा० जैन का यह व्यवहार बताता है कि कि उनकी करतार व उजागर से पहले ही मिलीभगत थी।'

हत्या के बाद के डा० जैन के व्यवहार का उल्लेख करते हुए श्री सिद्धू ने कहा कि यह साफ जाहिर है कि डा० जैन सहायता के लिए तभी चिल्लाए, जब उन्हें विश्वास हो गया कि हत्यारे भाग गए हैं। मैं यह मानता हूँ कि डा० जैन के चिल्लाने में भी कोई 'तात्कालिकता' नहीं थी। यहां यह भी महत्वपूर्ण है कि यद्यपि डा० जैन खुद एक डाक्टर हैं, तब भी उन्होंने नाले में पड़ी अपनी पत्नी को किसी तरह की सहायता देने की कोशिश नहीं की। उन्होंने नाले में उतरकर अपनी पत्नी को सान्त्वना मात्र के लिए भी स्पर्श नहीं किया। सच तो यह है कि वह नाले में उतरे ही नहीं। वह तब नाले के पास व

इंतजार में कि अन्य लोग आकर विद्या जैन को बाहर निका
निर्दोष पति सम्भवतः इस तरह जानबूझ कर नहीं खड़ा रहता, जै
डा० जैन ने ऐसी स्थिति में किया। डा० जैन के लिए स्वाभावि
यह था कि वह खुद नाले में उतरते और अपनी पत्नी को चाहे
सहायता होती, पहुंचाने की कोशिश करते।"

"दूसरी तरफ यह भी महत्वपूर्ण है कि डा० जैन ने हत्यारों का पी
करने की कोई कोशिश नहीं की। उन्होंने अपने नौकरों आदि से
उनका पीछा करने को नहीं कहा। उन्होंने अपने किसी पड़ोसी को
नहीं बुलाया। इसके बजाय उन्होंने अपनी घायल पत्नी को यदि वह
समय तक मर न गई हो, पास के मूलचन्द अस्पताल में न ले जाकर
तेन नर्सिंग होम ले जाना उचित समझा। एक डाक्टर होने के नाते
यह देखना चाहिए था कि उनकी पत्नी की दशा ऐसी है कि उसे तत्
डाक्टरी सहायता की आवश्यकता है, न कि उत्तम डाक्टरी सेवा क

सेशन जज श्री सिद्ध ने विद्या जैन की हत्या व षडयन्त्र में चन्द्रेश
व राकेश कौशिक को भी दोषी ठहराया। कौशिक को उन्होंने 'डाय
आफ आपरेशन्स' की संज्ञा दी और चन्द्रेश को इस कांड की 'प्रेरणा

जज महोदय ने भागीरथ व कल्याण गुप्त को यद्यपि षडय
अपराधी पाया, मगर वास्तविक हत्या में (दफा ३०२–३४) में नहीं

अपने फैसले के महत्वपूर्ण अंश सुनाने के बाद श्री सिद्ध सजा
से पहले थोड़ा रुके। उन्होंने एक बार अदालत में बैठे अभियुक
निगाह दौड़ाई।

एन० एस० जैन, चन्द्रेश शर्मा, राकेश कौशिक, उजागर सिंह,
सिंह, भागीरथ, व कल्याण गुप्ता को विद्या जैन की हत्या के
में अपराधी पाया गया (दफा १२०–बी (१) १०९।

उजागर सिंह विद्या जैन की हत्या के लिए दफा ३०२ में
पाया गया।

एन० एस० जैन, चन्द्रेश शर्मा, राकेश कौशिक और करतार

कथा जैन की हत्या के लिए अपराधी घोषित किया गया (दफा ३०२-
कल्याण गुप्ता व भागीरथ को शिखा जैन की हत्या के अ
३०२-३४) में सन्देह का लाभ देते हुए इस अपराध से बरी
दया गया।

अभियुक्तों को सजा

"नए कानून के अनुसार हत्या के लिए उम्र कैद सामान्य सजा
और फांसी एक अपवाद। अतः हत्या के लिए फांसी सामान्य स
नहीं है। यदि किन्हीं मामलों में फांसी देनी ही है तो अदालत को इस
लए विशेष कारण बताने होंगे।

श्री सिंह ने कहा; "मेरे विचार में इस केस में किसी भी अभियुक्त
को फांसी देने के लिए कोई विशेष कारण नहीं है। यह सच है कि
जैन, धन्द्रेश, कौशिक, उजागर और करतार ने एक 'कायर' प्रयोज
बड़े ही सुनियोजित व निर्मम ढंग से शिखा जैन की हत्या की
। वस्तुतः उनके पक्ष में एक भी प्रमाण नहीं है। अतः यह सम्भव
नहीं है कि इनमें से किसी एक से भी नरमी की जाए। इसका अर्थ यह
आ कि जो भी सजा उचित समझी जाए, वह सभी को बराबर
जाए। यदि इन्हें फांसी देनी हो तो इस तथ्य को नजरअन्दाज नहीं
किया जा सकता कि इन पांचों को फांसी देनी होगी। यह भी एक
कारण है जो मुझे कम सजा के लिए प्रेरित कर रहा है। यह विचार
कानून में नवीनतम परिवर्तनों एवं उच्च-न्यायालयों के निर्णयों की दि
भी अभिप्रेरित है।"

अतः अभियुक्तों को निम्न प्रकार सजाएं दी जाती हैं:—

एन० एस० जैन, धन्द्रेश शर्मा, राकेश कौशिक, उजागर सिं
करतार सिंह, भागीरथ और कल्याण गुप्ता को दफा १२०—बी (१)
०९ के अन्तर्गत उमर कैद की सजा दी जाती है।

२—जैन, धन्द्रेश, कौशिक और करतार सिंह को दफा ३०२-३४
के अन्तर्गत उमर कैद की सजा दी जाती है।

चली गई। मैं अपनी कार नं० डी० एल० बी० ४८४७ को चाबी से खोलूं, इससे पहले ही मुझे हायापायी होने की-सी कोई आवाज़ सुनाई दी, जिससे मुझे लगा कि मेरी कार के बांयीं ओर कुछ गड़बड़ है। मैं अपनी कार के पीछे की ओर से बायीं ओर गया और वहां मैंने किसी को भ देखा और मैं हैरान रह गया कि क्षण-भर में ही मेरी पत्नी को क्या हुआ। मकान की दीवार से लगी नाली में एक प्रकार की खलबली देखकर मैंने झांका और एक चित पड़ी हुई आकृति और किसी को कोई हरकत करते हुए देखा। तत्क्षण मैं पागलों की तरह सहायता के लिए चिल्लाने लगा। उसी समय एक व्यक्ति नाले से बाहर कूदा और मैं उससे सवाल पूछने लगा और जब उस व्यक्ति ने अपने हाथ में रिवाल्वर जैसी दीखने-वाली किसी चीज़ का रुख मेरी ओर किया मैं मदद के लिए चिल्लाता रहा और मुझे अहसास हुआ कि यह मेरी पत्नी श्रीमती विद्या जैन थी, जो वहां पड़ी कराह रही थी। इसी बीच मेरे मेहमान ठाकुर राम सिंह और श्री गंगा सिंह उस स्थान पर आये और उन्होंने मेरी पत्नी को, जो कि तब भी कराह रही थी, उठाया। उस समय मैंने दो आदमियों को उत्तर की ओर भागते हुए देखा। वे मुझे लगभग २५ से ३५ वर्ष की आयु के और लगभग ५ फुट ७ इंच लम्बे प्रतीत हुए। उनके दाढ़ी नहीं थी, लम्बे बाल बिखरे हुए थे, सफेद-सी धोतियां और सफेद-सी कमीजें पहने हुए थे। मैंने अपनी पत्नी को तुरन्त कार में डाला और चिकित्सीय सहायता के लिए डा० सेन के नर्सिंग होम की ओर भागा। मुझे उसकी तकलीफ की गम्भीरता का कोई इल्म न था। नर्सिंग होम पहुंचने पर वह मृत घोषित की गई। उपरोक्त दो व्यक्तियों ने मेरी पत्नी श्रीमती विद्या जैन की हत्या की है। उनके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाए।

(अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित) हस्ताक्षर-एन० एस० जैन
४-१२ ...

०

कश्मीर यात्रा - डा० एन० एम० जैन व चन्द्रेश श

न व चन्द्रेश शर्मा 'प्रिंस मारचंट' नामक शिकारे पर

फ़ैसले के बाद,
डा० जैन
कोर्टरूम से
बाहर
निकलते हुए

फैसले के बाद फौरन भूपेन्द्र कुमार स्नेही ने क्राइम ब्रांच के तत्कालीन एस० पी० अशोक पटेल को बधाई दी। बाएं खड़े हैं . क्राइम ब्रांच के डी० एस० पी० सरदार अवतार सिंह और दाएं हैं डी०एस०पी०श्री० नरेन्द्र नाथ तुली

●
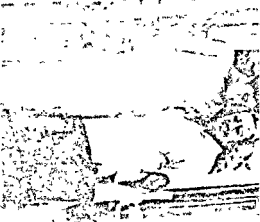
फैसले के बाद · भूपेन्द्र कुमार स्नेही, एस० पी० श्री अशोक पटेल (बीच में) डी० एस० पी० श्री नरेन्द्र नाथ तुली (बाएं) व डी० एस० पी० सरदार हरगोविन्द सिंह से फैसले के कानूनी मुद्दों पर बातचीत करते हुए।

क . स्वर्गीय श्री क्षितीन्द्रमोहन मित्र। सम्पादक : आलोक मित्र। ·
ऐन्द्रनाथ घोष द्वारा मित्र प्रकाशन प्रा० लि० के लिए प्रकाशित तथा
, प्रेस प्रा० लि०, इलाहाबाद—३ में मुद्रित।

फैसले के बाद फौरन भूपेन्द्र कुमार स्नेही ने क्राइम ब्रांच के तत्कालीन एस० पी० अशोक पटेल को बधाई दी।
बाएँ खड़े हैं : क्राइम ब्रांच के डी० एस० पी० सरदार अवतार सिंह और दाएँ हैं डी०एस०पी०श्री० नरेन्द्र नाथ तुली।

●

फैसले के बाद . भूपेन्द्र कुमार स्नेही, एस० पी० श्री अशोक पटेल (बीच में) डी० एस० पी० श्री नरेन्द्र नाथ तुली (बाएँ) व डी० एस० पी० सरदार हरगोविन्द सिंह से फैसले के कानूनी मुद्दों पर बातचीत करते हुए।

संस्थापक स्वर्गीय श्री क्षितीन्द्रमोहन मित्र। सम्पादक : आलोक मित्र।
श्री धीरेन्द्रनाथ घोष द्वारा मित्र प्रकाशन प्रा० लि० के लिए प्रकाशित तथा माया प्रेस प्रा० लि०, इलाहाबाद-३ में मुद्रित।